॥ ओ३म् तत्सद् ब्रह्मणे नमः ॥

श्री सत्यधर्म

भजन कीर्तन मञ्जरी



१—त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

२—अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहऊँ निर्वाण ।
जन्म जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन ॥

३—बार बार वर मांगहूं, हर्ष देहो श्री रंग ।
पद सरोज अनुपायिनी, भक्ति सदा सत्संग ॥

प्रकाशक :

श्री सत्यधर्म प्रकाशन (पब्लिकेशन्ज़) ट्रस्ट

"श्री सत्यधर्म मन्दिर"

स्वामी हेमराज मिशन मार्ग,

७/५, पूर्वी. पटेल नगर, नई दिल्ली-११०००८

समर्पण

"त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये"

"श्री सत्यधर्म भजन कीर्त्तन मञ्जरी" की यह लघु पुस्तिका श्रीजयकिशन नारंग तथा श्री प्रह्लाद नारंग, संचालक, नारंग इण्डस्ट्रीज तथा निर्माता नारंग सिलाई मशीन, (६६६/७००, मुकीमपुरा, सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली—७) ने अपने स्वर्गीय पूजनीय पिता श्री लाला कंवलनयन जी नारंग की पुण्य स्मृति में भगवत् प्रीत्यर्थ तथा भक्तजन लाभार्थ प्रकाशित कराकर श्री सत्य धर्म मण्डल, ७/५, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली-८ को समर्पित की है। परमेश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति तथा सद्गति प्रदान करे एवं श्री लाला जी की फुलवारी गुरु-भक्त एवं धर्म-परायण इस सम्पूर्ण नारंग परिवार को सदैव सुखी, सानन्द, समृद्धिशाली और फलता फूलता बनाये रखे !

शुभमिति श्री रामनवमी, चैत्रशुदी ६, सम्वत् २०४४, तदनुसार ७ अप्रैल, १६८७.

वेदोक्त आशीवचनों सहित,
स्वामी तिलक चिदाकाशी
परमाध्यक्ष, श्री सत्यधर्म मण्डल।

१—न जानामि यागं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा-जन्म-दुःखौघ-तातप्यमानं,
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥

२— तात स्वर्ग-अपवर्ग सुख धरिये तुला एक अङ्ग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

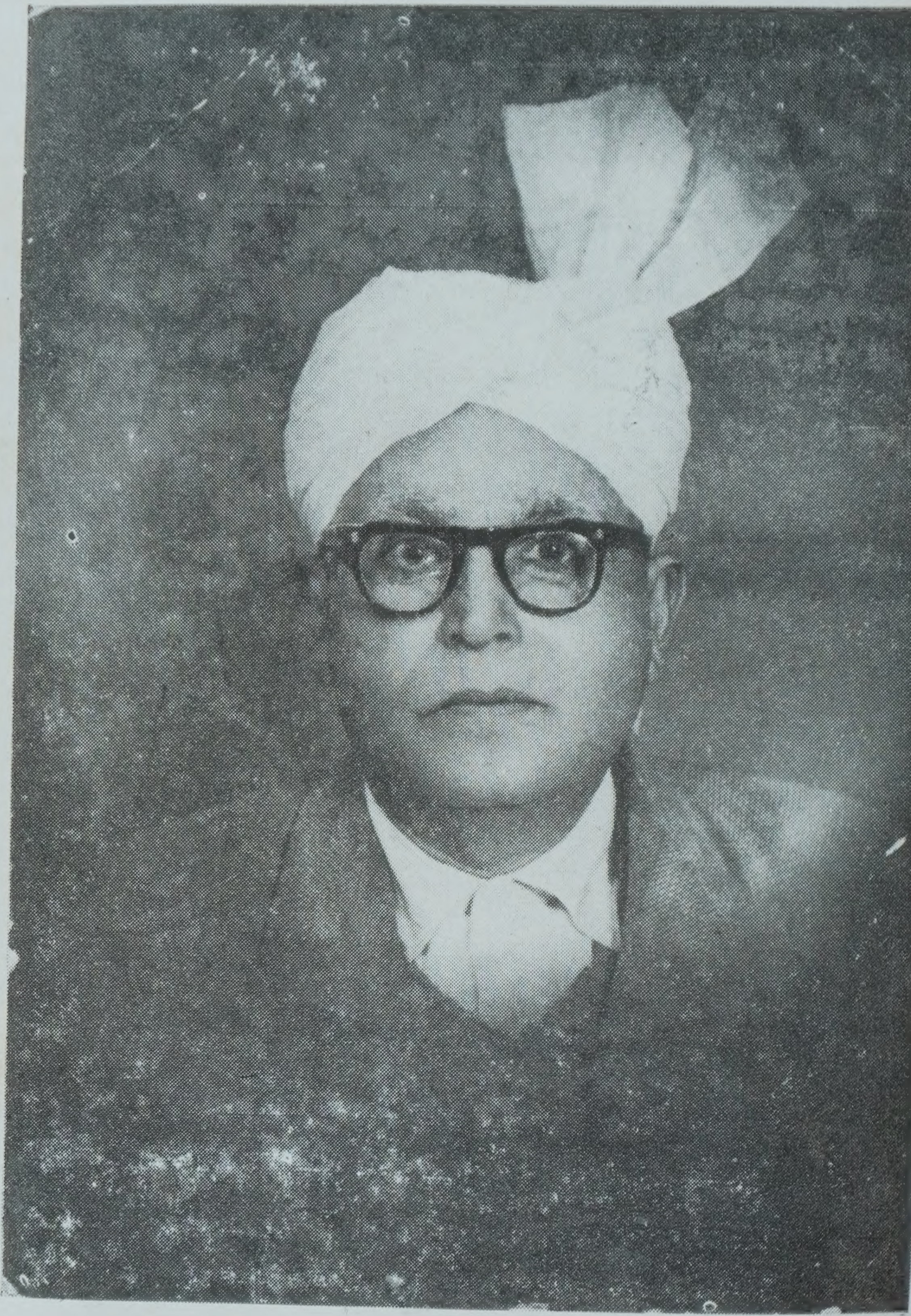
३— आह्वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

विष्णुरुवाच:

नाहं वसामि बैकुण्ठे योगिनां हृदये न वै।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति-तत्र तिष्ठामि नारद॥



पूज्य सद्‌गुरुदेव श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री १०८ स्वामी
चेतनानन्द जी महाराज चिदाकाश।

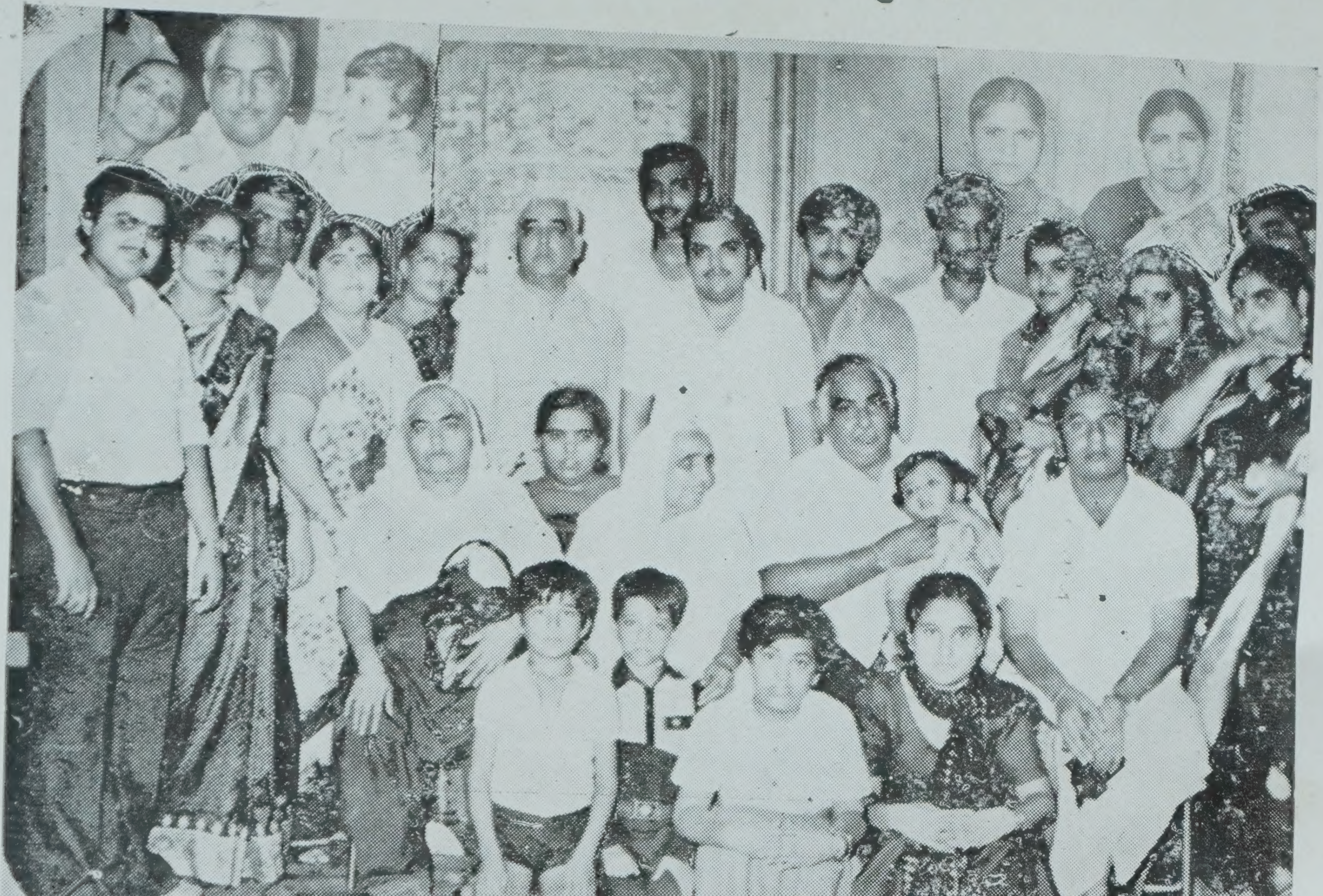


स्वर्गीय श्री लाला कंवलनयन जी नारंग
जन्म सन् १९०४, स्वर्गारोहण १२ मार्च, १९६७



लाला कंवलनयन जी नारंग अपनी धर्मपत्नी
श्रीमती विशनोबाई जी के साथ

श्री लाला कंवलनयन जी नारंग की फुलवारी



भूमिका

पूजनीय ब्रह्मलीन गुरुदेव श्री १०८ स्वामी चेतनानन्द जी महाराज चिदाकाशी के वरदान से और श्रीभगवान की असीम अनुकम्पा से इस आश्रम में प्रातः-सायं निरन्तर सत्संग की गंगा बहती है। प्रातः काल गम्भीर शास्त्रीय विषयों का चिन्तन होता है तो सांयकाल रामायण, श्रीमद् भागवत महापुराण, योगवासिष्ठ अथवा श्री अद्वैत सिद्धान्त की प्रसिद्ध हिन्दी पुस्तकों के पठन के साथ साथ भजन कीर्तन भी होता है। प्रायः हमारी सभी सत्संगी बहिनों के अपने अपने प्रिय भजन हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी अपनी कापी में लिख रखा है। वे सभी अपनी अपनी कापियाँ साथ-साथ उठाए आश्रम में पधारती हैं। कई बहिनों ने कई बार आग्रह किया कि इन सभी भजनों को पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया जा सके तो बहुत अच्छा हो। ऐसे ही हमारी एक बहिन श्रीमती पुष्पा देवी नारंग भी, जो सब्ज़ी मण्डी में हमारी सत्यधर्म मण्डल की शाखा का संचालन करती हैं, अपने प्रिय भजनों की कापी लेकर समय समय पर आश्रम के उत्सवों में पधारती हैं। ऐसे ही एक अवसर पर वे जब अपने प्रिय भजनों की कापी सहित सभा में पधारीं तब उन्होंने भी यह आग्रह किया कि चुने हुए भजनों की एक पुस्तक छपनी चाहिए, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार किया।

तत्पश्चात् हमारे ट्रस्ट की एक सभा में श्रीमती पुष्पा देवी नारंग के पतिदेव, श्री जयकिशन जी नारंग, और देवर, श्री प्रह्लाद नारंग जी, ने अपनी नारंग इण्डस्ट्रीज़ की ओर से उक्त प्रस्तावित भजनावली के छपवाने का पेशकश की। तदुपरान्त सभी

भजनों को व्यवस्थित करने का कार्य हाथ में लिया गया जिसे आश्रम की ही दो बच्चियों—श्रीमती कान्ता सेठ, एम० ए०, बी० टी० तथा कुमारी कान्ता नारंग जी—ने शीघ्र ही पूर्ण किया। प्रूफ संशोधन का कार्य भी उन्होंने ही किया। ईश्वर इन स्नेहमयी देवियों को सदैव सुखी और स्वस्थ रखे! जनवरी के आरम्भ में पुस्तक की छपाई का कार्य हाथ में लिया गया। तत्सम्बन्धी अन्तिम कार्य इस भूमिका के लिखने के साथ पूरा हो रहा है। इस पुस्तक का सारा मुद्रण व्यय नारंग इण्डस्ट्रीज, ७००, मुकीमपुरा, सब्ज़ी मण्डी, दिल्ली, ने वहन किया है जिसके लिए मैं सभी संबंधित प्रिय जनों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। आशा है यह पुस्तिका सभी भाई बहिनों को अच्छी लगेगी और इसके गीतों तथा कीर्तनों से सभी यथेष्ट आनन्द उठाएंगे। इति शम्।

स्वामी तिलक चिदाकाशी
परमाध्यक्ष, श्री सत्यधर्म मण्डल।

७।५, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली—११०००८
दिनांक : शुभ रामजन्मोत्सव दिवस, ७ अप्रैल, १९८७

स्वर्गीय श्री लाला कंवलनयन जी नारंग की संक्षिप्त जीवन-गाथा

श्री लाला कंवलनयन जी नारंग का शुभ जन्म अविभाजित भारतवर्ष के पंजाब प्रांत में नरसिंहावतार की पावन नगरी प्रह्लादपुरी, मुलतान, में चौधरी करमचन्द तथा श्रीमती रुक्मणी देवी के पुत्ररत्न के रूप में सन् १९०४ में हुआ। वहां उनका घर मोजा राजघाट, सायर मियानी, में स्थित था।

इनके बचपन में ही माता जी तथा पिता श्री के स्वर्गस्थ हो जाने के कारण इन की देखभाल इनके ज्येष्ठ भ्राता श्री चौधरी रामचन्द जी तथा दादा श्री चौधरी बसुराम जी ने की। बाद में उक्त भ्राता और दादा श्री की वृद्धावस्था में ये उनके परम सेवक बने रहे।

श्री कंवलनयन प्रारम्भ से ही एक सुशील बालक के रूप में अपनी जीवन-लीला करते हुए बहुत ही श्रद्धावान् गुरुभक्त बने। मुलतान में बावली हजूरीबाग में श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज, शिष्य श्री स्वामी हेमराज जी महाराज, उन दिनों निवास किया करते थे। बालक कंवलनयन उनके सत्संग में जाया करते थे। बड़े होने पर उनकी सत्संग में रुचि और भी बढ़ गई तथा बहुत बार श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज उनके निवास-स्थान सायर मियानी में भी सत्संग हेतु आते रहते थे। श्री स्वामी हेमराज जी महाराज के पुत्र श्री मलिक दौलतराय जी से भी युवा कंवलनयन का सम्बन्ध इस सत्संग के नाते जुड़ गया और वे भी समय समय पर सायर मियानी में सत्संग के लिए पधारा करते थे। इस प्रकार

श्री कंवलनयन जी प्रारम्भ से ही एक भक्त का रूप धारण किए हुए थे । मुलतान में सायर मियानी में उन्होंने श्री सत्यधर्म मण्डल की एक शाखा की स्थापना की और वहां निरन्तर सत्संग की धारा बहाते रहे ।

सन् १९४७ में भारत का विभाजन होने पर श्री लाला कंवल-नयन जी अपने परिवार सहित दिल्ली आ गए । सन् १९५० मे हमारे पूज्य गुरुदेव श्री १०८ स्वामी चेतनानन्द जी महाराज चिदाकाशी से उनकी मुलाकात हुई और उन्होंने श्री स्वामी जी महाराज के चरणों में अपने सम्पूर्ण परिवार को और बंधु-बांधवों को सत्संग में लगा दिया और अपने आपको उनके समर्पित किया । वे हर रविवार और बुधवार को श्री स्वामी जी महाराज के दरियागंज, दिल्ली, स्थित आश्रम में उपस्थित होने लगे । सन् १९५१ में श्री स्वामी जी महाराज ने पटेल नगर में सत्यधर्म मन्दिर की स्थापना की और तभी सर्वप्रथम सार्वजनिक भण्डारा प्रारम्भ किया, जिसकी सेवा श्री लाला कंवल नयन जी ने अपने ऊपर ली । तदुपरान्त पटेल नगर में होने वाले सभी उत्सवों के भण्डारों की सेवा लाला जी आजीवन अपने परिवार सहित निभाते रहे ।

सन् १९६३ में श्री स्वामी जी महाराज ने पंचकुण्ड, पुष्कर, राजस्थान, में स्वामी परमानन्द आश्रम के नाम से एक नया आश्रम बनाया जहां कि गायत्री महापुरश्चरण यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें राजस्थान के तत्कालीन गर्वनर श्री डा० सम्पूर्णानन्दजी, मुख्यमंत्री जी मोहन लाल जी सुखाडिया तथा उनकी मंत्री परिषद् के आठ अन्य सदस्य एवं दिल्ली से श्री मुरार जी देसाई एवं बाबू जगजीवन राम जी आदि एवं आल रिलीजनस् कान्फ्रेंस के बहुत से विदेशी सदस्य एवं संत कृपाल सिह जी भी पधारे थे । इस अवसर पर आयोजित विशाल सार्वजनिक भण्डारे की प्रवन्ध-व्यवस्था भी श्री लालाजीके ही प्रबल कंधों पर डाली गई, जिसे उन्होंने सफलतापूर्वक निभाया । इसी प्रकार हमारे लाल बाग, लोनी, स्थित आश्रम, वेदान्त

निकेतन, में भी जब जब समारोह होते थे तब तब उनके भण्डारों की व्यवस्था स्वयं लाला जी अपने परिवार के सदस्यों सहित किया करते थे। अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि सन् १९५१ से सन् १९६७ पर्यन्त हमारे यत्र तत्र तथा सर्वत्र सभी भण्डारों के भण्डारी श्री लाला कंवलनयन जी ही रहे।

पाकिस्तान से उजड़ कर दिल्ली में आकर श्री लालाजी ने बड़ी बहादुरी से अपने परिवार को संभाला। अपने तीनों सुपुत्रों—श्री जयकिशन नारंग, श्री गोपीचन्द नारंग तथा श्री प्रह्लाद नारंग को उन्होंने सब प्रकार की शिक्षा-दीक्षा सम्यक् प्रकार दिलाई। अपने छोटे बेटे श्री प्रह्लाद नारंग को बी०ए०, एल०एल०बी० तक की शिक्षा दिलाई। नारंग इन्डस्ट्रीज के नाम से सिलाई मशीन का एक बड़ा कारखाना भी स्थापित किया जो आज दिल्ली में सिलाई मशीनों की श्रेणी में अपना नाम विख्यात किए हुए है। इस प्रकार लालाजी ने अपने तीनों बेटों और बेटियों को सर्वगुण सम्पन्न बना कर उनके वैवाहिक सभी कार्य बहुत शानो-शौकत के साथ सम्पन्न किए।

श्री लालाजी ने अपने समस्त परिवार और अन्य बंधु बांधवों को पूज्य श्री १०८ स्वामी चेतनानन्द जी महाराज के चरणों में लाकर उनका अध्यात्म-पथ में ठीक प्रकार मार्ग-दर्शन किया। उन्होंने सब्जी मण्डी में भी सत्यधर्म मण्डल की एक शाखा स्थापित की जिसे वे जीवन पर्यन्त यत्नपूर्वक चलाते रहे। वहां प्रतिदिन सायंकाल सत्संग आयोजित होता जिसमें मानव के मार्गदर्शन के लिए अमृतवर्षा होती। १२ मार्च, १९६७, को श्री लाला जी का अचानक देहावसान हो गया जिससे सभी सत्संगियों और स्वयं हमारे महाराज जी ने बहुत ही दुःख का अनुभव किया। लाला जी इस प्रकार बेटों-बहुओं, बेटियों तथा जामाताओं, पोते-पोतियों और दोहते-दोहतियों के प्रफुल्लित परिवार को छोड़कर गए हैं और वास्तव में एक सफल-

जीवन भद्रपुरुष प्रमाणित हुए। अब उनके पश्चात् उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती विशनी बाई जी, हमारी सब्जी मण्डी स्थित शाखा की अध्यक्षा हैं और उनकी देखरेख में श्रीमती पुष्पादेवी जी नारंग सत्संग की सभी व्यवस्था करती हैं। लाला जी का समस्त परिवार अब तक निरन्तर इस मण्डल की भरसक सेवा करता आया है और मण्डल के सभी कार्यों में भरपूर सहयोग देता आ रहा है। उनका सभी परिवार श्रेष्ठ है। पिता श्री के पुण्य प्रताप से यह नारंग परिवार खूब फल-फूल रहा है। सभी ओर आनन्द की अनुभूति हो रही है। सभी बाल-बच्चे भी अच्छे हैं, जिसके लिए मैं इस समस्त परिवार को अपनी शुभाशीष दिये बिना नहीं रह सकता। उनकी सेवाएं इस मण्डल के प्रति निरन्तर बढ़ चढ़ कर जारी हैं। यद्यपि हमारे महाराज जी के शरीर शांत हुए आज १० वर्ष पूरे हो रहे हैं, किन्तु इस परिवार की सेवाएं इस मण्डल के प्रति निरन्तर समर्पित हैं, जिसके लिए वे धन्यवाद और अभिवादन के पात्र हैं। परमेश्वर इस परिवार को सब प्रकार समुन्नति-पथ और अभ्युदय-मार्ग पर अग्रसर रखे, यही मेरी मनोकामना और प्रार्थना है।

स्वामी तिलक चिदाकाशी
परमाध्यक्ष,
श्री सत्यधर्म मण्डल

७/५, ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली—११०००८
शुभमिति चैत्र शुक्ला ६, संवत् २०४४
तदनुसार ७ अप्रैल, १९८७

॥ मंगल ॥

* सयैया *

चेतन रूप अनादि अनामय, सत्ता मात्र अखण्ड प्रकाशी।
अचल अनाम अरूप अजूनी, अगम अपार अभय अविनाशी।
नित्य सनातन पुरुष पुरातन, परमानन्द सर्व सुख राशि।
सत्य स्वरूप निरन्तर इस्थित, केवल अनुभव मात्र हुलासी। १।

एक अखण्ड निरंजन अद्वै, आतम रूप स्वत: परकाशी।
निकट न दूर न अन्तर बाहर, पूरण रूप महा आकाशी।
आदि न मध्य न अन्त निरन्तर, ऊंच न नीच न शोक हुलासी।
ईश न जीव न सेवक स्वामी, केवल चेतनमात्र बिलासी। २।

पूरण रूप आकाश विराजे, चेतन रूप पवन सुखदाई।
अग्नि प्रकाश अति छवि छाजे, जल सर्वातम रूप सुहाई।
इस्थित रूप धरयो धरती वपु, जगत् और ब्रह्म में भेद न राई।
दूसर हुआ न होग न है कछु, वस्तु अद्वैत सदा इस्थाई। ३।

नाहिन रूप न रंग कछू सब, रूप और रंग कियो उजियारा।
नाहिन नाम न जात कछू सब, नाम और जात कियो पसारा।
नाहिन भेष न पक्ष कछू सब, भेष और पक्ष कियो बिस्तारा।
नाहिन देह अकार कछू अब, हेमां देह कियो अकारा। ४।

सत्गुरु धन्यवाद

मेरे अब पुण्य सवाए हैं, जो सत्गुरु पूरण पाए हैं।

दोहा

बारम्बार दण्डोत मम, धन्यवाद दिन रात।
पूरण सत्गुरु ब्रह्मरूप, परमेश्वर साक्षात्॥
अहो अच्छे दिन आए हैं, जो सत्गुरु प्रगटाए हैं ॥१॥
ज्ञान रबि आनन्दघन, गुणनिधि परम उदार।
अमर अचल शांतिभवन, अनुभवसिंधु अपार।
सभी दुःखड़े भुलाए हैं, शरण जब तेरी आए हैं ॥२॥
चरण कमल की धूल से, नाशे पाप अरु दोष।
शरण पड़े जो जन लहे, शांति तृप्ति अरु मोक्ष।
भरम भय सब मिटाए हैं, जो परतीत लाए हैं ॥३॥
सत उपदेश सुनाय नित, कियो अविद्या नाश।
नित बिठाय सत्संग में, दीयो सुख की राश।
सुन्दर गुण सों सुहाए हैं, जो नित सत्संग आए हैं ॥४॥
जगमोहन उपकारमय, नित प्रफुलित सुखधाम।
दया स्वरूप दीनों सकल, मन तन कर विश्राम॥
तृपतचित कृतकृताए हैं, जो तुझ में प्रभु समाए हैं ॥५॥
रखो निवास मम हृदय में, मन तन के रक्षपाल।
अपने सत् उपदेश से, गद्गद् रखो निहाल।
नारी नर सिर निवाए हैं, तेरी रक्षा में आए हैं॥

हेमराज सर्वज्ञ गुरु, पूरन देव अपार।
नमस्कार दण्डोत पुनि, वन्दन बारम्बार॥

गणेश-वन्दना

पूजिए आदि गणेश, प्रथम प्रणाम करूँ
जय गौरीनन्द गणेश, प्रथम प्रणाम करूँ ।। टेक ।।

माता जिनकी पार्वती है, जिनके पिता महेश ।।१।।
शीश जटानन मुकुट विराजे, सुन्दर वदन सुरेश ।।२।।
विघ्नहरण मंगल के दाता, भक्तजनों के ईश ।।३।।
कृपा जिनकी सकल जगत पर तीन लोक के ईश ।।४।।
देव मुनि सब पूजें जिनको, नारद शेष महेश ।।५।।
दो कर जोड़ शरण प्रभु तेरी, काटो सकल क्लेश ।।६।।

*

जय जय गुरु नन्दन

जय जय गुरु नन्दन हाथ जोड़ हम वन्दना करते हैं
हाथ जोड़ वन्दना करते हैं ।। टेक ।।

माथे पर तिलक विराजे, गले में माला साजे ।
प्रभु तीन लोक के नाथ ध्यान हम तुम्हारा धरते हैं ।।१।।

हम दीन दुःखी हैं भारी, नाथ दुःखियों के रखवारी ।
हम आए शरण तिहारी, तेरी हम पूजा करते हैं ।।२।।

हम दूर-दूर से आए, तेरी जय जयकार बुलाए ।
सब देवी देवते आए, दर्श की आशा करते हैं ।।३।।

दासनदासी को यह वर दीजे, मेरा चित चरणों में लीजे ।
मोहे अपनी शरण में लीजे, ध्यान हम तुम्हारा धरते हैं ।।४।।

देवकी दे लाल तांई

देवकी दे लाल तांई, सांवरे गोपाल तांई, वन्दना हमारी है,
बार बार वन्दना हमारी है ।। टेक ।।

देवकी के नन्दना, दंडौत मेरी वन्दना
लगावाँ घिस घिस चन्दना, काटो जी मेरे बन्धना ।
हो के दयाल लाल, सारे दुःख देवो टाल
वन्दना हमारी है; बार बार वन्दना हमारी है ।। १।।

वेद पुराणां ने यश गाया, नेति नेति बोल दे,
संत महात्मा ऋषि मुनि सब, तैनूं फिरदे टोलदे ।
सारे थक्के भाल, भाल कहंदे होए हे दयाल,
संकट निवारिए-बार बार वन्दना हमारी है ।।२।।

तेरी शान निराली, रुतवा आला तेरे प्यार दा,
माया नाल बनाया नक्शा, तूं सारे संसार दा ।
पत्ते पत्ते डाल डाल, तुंहियों दिस्से नन्दलाल,
वन्दना हमारी है, बार बार वन्दना हमारी है ।।३।।

गगन मण्डल दा थाल बनावां, सूरज चांद जगावां ज्योती,
नाम तेरे दीयां चुन चुन कलियां, कलियां दे पिरोवाँ मोती,
मोती जोड़ भाल भाल, सेवक ने प्रेम नाल,
आरती उतारी है, बार बार वन्दना हमारी है ।।४।।

तीन लोक दे पति

तीन लोक दे पति परमात्मा, मेरी है दण्डौत वन्दना ।।
मेरी शुद्ध कर देवो आतमा, मेरी है दण्डौत वन्दना ।।टेक।।

मैं हूं दर तेरे दी चाकर, अरजां करदी मैं शीश निवाकर,
होवे कृपा ते मिलन महात्मा, मेरी है दण्डौत वन्दना ।।१।।

तेरी महिमा मैं किस मुख गांवां, अपने अवगुणां तों शरमावां,
तेरा दर्श मनोहर पावां, मेरी है दण्डौत वन्दना ।।२।।

तेरा शरणी मैं दीनदयाला, मैं हूं निपट अयानी बाला,
तेरे गीत मनोहर गावां, मेरी है दन्डौत वन्दना ।।३।।

दासनदासी आई दर तेरे, तेरे सिमरन बिन दुःख घनेरे,
दाता सदा बसो चित मेरे, मेरो है दण्डौत वन्दना ।।४।।

✲

गोविन्दा तेरा आसरा

गोविन्दा तेरा आसरा, गोपाल तेरी आस वे,
भक्तां दी पुकार सुनले, दासां दी अरदास वे ।।टेक।

वृन्दावन दी गलियाँ मैं लभ लभ हारियां-२
गोपियां ग्वालां कोलों, पुछ पुछ हारियां-२
जमुना दे कण्डे उत्ते, पाई सांहणी रास वे ।। १ ।।

मीरा ने प्रेम पाया, वह भी तेरा हो गई-२
द्रोपदी दी लाज राखी, वह भी तेरी हो गई-२
सानूं वी रख ले २ चरणां दे पास वे ।। २ ।।

भीलनी दे झूठे बेर, ओ भी राम खा गए-२
सुदामा दे रूखे चावल, शाम भोग लगा गए-२
साडा वी स्वीकार कर ले २ जो कुछ साडे पास वे ॥३॥

*

जरा आ शरण

जरा आ शरण मेरे राम को
मेरा राम करुणा निधान है।

घट घट में है वही रम रहा
वही जगत का भगवान है ॥ टेक ॥

लिया आसरा जिस नाम का वही बन गया मेरे राम का
जिस नाम से पत्थर तरे फिर तेरा तरना आसान है ॥ १ ॥

भक्ति में उसकी तू हो मगन, उसे पाने की तू लगा लगन।
तेरे पाप सब धुल जायेंगे, हरि का नाम ऐसा महान है ॥२॥

लगी भीलनी को यह आस थी, प्रभु कब बुझेगी मेरी प्यास जी।
झूठे बेर खाए थे राम ने, जिसे जाने सारा जहान है ॥ ३ ॥

तेरी दासी कब से पुकारती, तेरे चरणों में अर्ज गुजारती।
मत भूल जाना हे प्रभो, यह दासी बड़ी ही नादान है ॥ ४ ॥

*

कृष्ण मनाइए प्यारी

कृष्ण मनाइए प्यारी, शाम मनाइए प्यारी,
ओ रखदा लाज नी सइयों।

ओही सारे जीवां दा २, पालन हार नी सइयों ।।टेक।

मोर मुकुट मत्थे तिलक विराजे, गले वैजन्ती माला,
अधर मधुर मुख बंसरी साजे, सोहनी बंसरी वाला।
ओ सब तो आला है जी, उसदी शान नी सइयों ।। १ ।।

कृष्ण प्यारा नाच नचांदा, ज्यों जंगलां विच मोर,
सारे देवते सुन के आगए, बंसरी दी घनघोर।
बाजे बजदे ओथे, साजां नाल नी सइयों ।। २ ।।

चन्न द्वारे तारे चमकन, कृष्ण द्वारे सखियां,
देख देख न रजियां नी सखियों, मेरियां प्रेमिन अखियां।
मुखड़ा चमके उसदा, बांग गुलाब नी सइयों ।। ३ ।।

तट यमुना ते बंशी बजावे, देखो नी नन्दलाला,
हेर फेर के गउआँ ल्यावे, मोहन बंसरी वाला।
उसने नथया जाके, काली नाग नी सइयो ।। ४ ।।

राजे रंक सभी दुनियां दे, उसदा दिता खांदे,
उसद द्वारे उत्ते आके, मन चाहा फल पांदे।
डुबदे बेड़े तारे, तारनहार नी सइयो ।। ५ ।।

*

मेरा कोई न सहारा

मेरा कोई न सहारा बिन तेरे,
घनश्याम सांवरिया मेरे ॥टेक॥

तुम दीनबन्धु हितकारी, मैं दुखिया शरण तिहारी,
काटो जनम मरण के फेरे, घनश्याम सांवरिया मेरे ॥१॥

विषयों के जाल में फंसकर, बंध्यो मोहजाल में फंसकर
दुःख पायो नाथ घनेरे, घनश्याम सांवरिया मेरे ॥२॥

हम दीन हीन संसारी, इक आशा नाथ तुम्हारी,
तेरे चरण कमल के चेरे, घनश्याम सांवरिया मेरे ॥३॥

दिन रैन चैन नहीं आवे, इक तेरी याद सतावे,
जग देख लिया बहुतेरे, घनश्याम सांवरिया मेरे ॥४॥

तूने लाखों पापी तारे, नहि कुछ गुण दोष विचारे,
दासी आन खड़ी दर तेरे, घनश्याम सांवरिया मेरे ॥५॥

जिसके हृदय में हरि सुमिरन होगा

जिसके हृदय में हरि सुमिरन होगा उसका सफल क्यों न
जीवन होगा ॥

भक्त का भगवान को भी चिन्तन होगा, उसका सहायक
मनमोहन होगा ॥टेक॥

सच्ची धारणा से प्रह्लाद ने जो ध्याया था, प्रह्लाद ने जो ध्याया था,
खम्बे में भक्त ने श्री रामजी को पाया था, श्री रामजी को पाया था।
जिसके हृदय में रघुनन्दन होगा, उसका सफल क्यों न जीवन होगा।१।
द्रोपदी ने बांधा था चार कच्चे धागों से, चार कच्चे धागों से,
बदले में भेजी थी साड़ियां हजारों में, साड़ियां हजारों में ॥
जिसका सहायक मनमोहन होगा, उसका सफल क्यों न जीवन होगा।२।
भक्तों को तारने जो तारनहार आए थे, तारन हार आए थे,
जंगलों में झूठे बेर भीलनी के खाए थे, भीलनी के खाए थे।
कहती थी कभी प्रभु दर्शन होगा, उसका सफल क्यों न जीवन होगा।३।
बन के वैरागी गीत राम जी के गाएजा, राम जी के गाए जा ॥
तेरी सारी मुश्किलें आसान वह बनाएगा, आसान वह बनाएगा ॥
पेटी में जिसके राम नाम धन होगा, उसका सफल क्यों न जीवन होगा।४।

हम द्वार तुम्हारे आए

हम द्वार तुम्हारे आए, फूलों की माला लाए ।टेक।

सुन लो अरजी मेरी, दर्शन देना हरी,
हमने चरणों में सीस झुकाए ॥ १ ॥
प्रेमी (दुःखी) कहने लगे, आंसू बहने लगे,
दिल खोल के हाल सुनाए ॥ २ ॥
क्यों कीनी देरी, पहनो माला मेरी,
अपने भक्तों को क्यों विसराए ॥ ३ ॥
कहे दासी पुकार, मैं तो तेरे आधार,
मुझको चरणों में अपने लगाए ॥ ४ ॥

ऐसी कर कृपा भगवान

ऐसी कर कृपा भगवान मेरा मन कदे वी डोले ना,
भर दे रसना विच रस ऐसा, कौड़ा वचन वी बोले ना।टेक।

तेरी भक्ति सदा कमावाँ, माया वल कदे ना जावाँ,
रोज़ हीरे मोती मनुआ, कागां वांग फरोले ना ।। १ ।।

मेरा रूप हस बन जावे, सुच्चे मोती चुन चुन ल्यावे,
बिषय विकारां वाली गठरी, मनुआ कदे वी फोले ना ।। २।।

माया विच पया भरमावे, काल कराल तो नहि घबरावे,
सुन्दर रूप तेरा अखियां तो, होवे कदे वी ओले ना ।। ३ ।।

दासनदास दे सतगुरु सांई, डोलन तो प्रभु सदा बचाईं,
भक्ति नाम तेरे दो सौदा, घट कदे वी ताले ना ।। ४ ।।

*

मेरे हृदय के मन्दिर में

मेरे हृदय के मन्दिर में, विराजे मूर्ति तेरी ।
आईना दिल बने मेरा, झलकती ज्योति हो तेरी ।।टेक।

झुके मस्तक सदा मेरा, तुम्हारे पाद पंकज में ।
चरण पर शीश हो मेरा, शीश पर चरण रंज तेरी ।।१।।

जो वाणी शब्द कुछ बोले, तेरा गुण गान हो केवल ।
तेरा ही नूर हर इक में, लखे आंखें सदा मेरी ।।२।।

कदम जावे मेरे केवल, तेरे मन्दिर की मंजिल तक ।
मेरा हर रोम गाता हो, गुण गाथा सदा तेरी ॥३॥

कर्म हाथों से गर कुछ हो, सभी सेवा तुम्हारी हो ।
हमेशा कान सुनत हों, मधुर वाणी सुधा तेरी ॥४॥

वृत्तियां हो मेरे मन की, एक आकार बस तेरी ।
हमेशा चित्त में चिन्तन हो, मोहनी मूर्ति तेरी ॥ ५ ॥

दूर हंगता व ममता हो, समाऊं सत्य चेतन में ।
हटे परदा दुई दिल से, बजे आनन्द की भेरी ॥ ६ ॥

*

सुन के आई लखां तारे

सुन के आई लखां तारे,
अज मेरा वी तरन ते दिल करदा ॥टेक।

तारन तो पहले गल सुनले,
दो गलां वी करन ते दिल करदा ॥१॥

सतगुरां पूरयाँ किरपा कीनी, नाम जपन दी पूंजी दीनी ।
साडा नाम जपन ते जी करदा ॥२॥

गहरी नदिया नाव पुरानी, मैं अन तारू तर वी ना जानी ।
मेरा पार करन नूँ जी करदा ॥३॥

मोर मुकुट मथे तिलक विराजे, गले बैजन्ती माला साजे ।
मेरा (साडा) दर्श करन नूं दिल करदा ॥४॥

*

भगवान सहारा बन जावो

भगवान सहारा बन जावो, मेरे शाम सहारा बन जावो।टेक।।

डगमग डोले मन की नैया, तेरे बिना मेरा कौन खवैया,
तुम आप किनारा बन जावो, प्रभु आप सहारा बन जावो ।।१।।
कोई तुमको निराकार कहे, कोई तुमको साकार कहे,
पर क्या हो तुम बतलादो जरा, उलझन का सहारा बन जावो ।२।
पढ़ती हूं गीता ग्रन्थ सभी, बस सब में एक ही सार मिले,
तुम कण कण में व्यापक हो प्रभु, अब आप नजारा बन जावो ।३।

✻

पग पग पे सहारा तेरा

पग पग पे सहारा तेरा,
सारे जग का आधार तू ही है ।
भला कैसे मैं तुमको भुलाऊँ
मेरे जीवन का सार तूं ही है ।टेक।।

तू है सूरज मैं तेरा कमल हूं, तेरे दर्शन बिना मैं विकल हूं ।
तेरी सेवा में मैं सुख पाऊं 'सारे सुखों का भण्डार तू है ।।१।।

तूं है चन्दा मैं तेरा चकोर हूं, तूं है सांवली घटा मैं मोर हूं ।
कैसे नाच कर मैं तुम को रिझाऊं, निराकार साकार तूं ही है।।२।

तूं है ज्योति किरण हूं मैं तेरी, शाम सुन लो अर्ज इक मेरी ।
मेरा तन मन तुमको ही अर्पण, मेरे मन का शृंगार तूं ही है ।।३।।

तूं है दाता मैं इक हूं भिखारी, तूं है ठाकुर मैं तेरा पुजारी ।
मेरा श्वास श्वास तुझे पूजे, मेरी सच्ची सरकार तू ही है ।।४।।

✻

लगी रहे मेरे मन दी तार

लगी रहे मेरे मन दी तार प्रभु नाल लगी रहे ।टेक।

तारां नाल जो तार जो मिल गई
भुल जावे संसार, गुरां नाल लगी रहे ।।१।।

सतगुरु सच्चा मारग दसदे, सतसंग दे विच अमृत बरसे
पी अमृत दी धार—गुरां नाल लगी रहे ।।२।।

मानुष जन्म अमोलक हीरा, मिले न बारम्बार
मेरे मन लगी रहे, गुरां नाल लगी रहे ।।३।।

तारां नाल जो तार जो मिल गई,
बड़ा हो जाये पार, गुरां नाल लगी रहे ।।४।।

राम राम पई जिह्वा बोले

राम राम पई जिह्वा बोले रग रग बोले हरी हरी
मेरी रग रग बोले हरी हरी ।। टेक ।।

उठ सवेरे अमृत वेले कर पहले स्नान,
सुरत शब्द नूं इकट्ठा करके, अन्दर ले जा ध्यान ।
अन्दर तेरे ब्रह्म ज्योति दा, इक सुन्दर स्थान ।
ओथे जाके देखले प्यारे, बैठा सुन्दर शाम ।
ओदे जाके दर्शन करले, सुरती रह जाए अड़ी खड़ी ।।१।।

तेरे भक्त ने शाम सुन्दर नूं, पानी अन्दर ध्याया सी,
ओदी आवाज नूं सुन के शामा, दौड़या दौड़या आया सी ।
गज राज दे प्राण बचा के, ग्राह नूं मार मुकाया सी ।
ओ नैया उसदी भव सागर तों, आके आप ही पार करी ।।२।।

राणा ने जदों जहर प्याला, मीरा नूं भिजवाया सी।
कहदां अमृत पीले मीरा, तेरे लई मंगाया सी।
मन मोहन ने दर्शन दे के ज़हर नूं अमृत बनाया सी।
ओ गट-गट करके पी गई मीरा, भक्त रह गई चढ़ी खड़ी।।३।।

✻

राम के चरणों में

राम के चरणों में जो भी आ गया।
दो जहां की रहमतें वह पा गया।।टेक।

राम का सुमिरण किया हनुमान ने।
राम के दिल में जगह वह पा गया।।१।।

राम की दीवानी शबरी भीलनी।
राम उसके बेर जूठे खा गया।।२।।

राम का सुमिरन किया प्रह्लाद ने।
तत्ते खम्भे से लिपट हर्षा गया।।३।।

तूं भी बन्दे नाम जपले राम का।
तर गया जो राम के गुण गा गया।।४।।

✻

जरा देर ठहरो राम

जरा देर ठहरो राम ऐसी भी क्या है,
अभी हमने जो भरके देखा नहीं है।।टेक।

चित्र कूट घाट पर गंगा के किनारे २
संतो की लगी भीड़ वहां तुलसी पधारे।।२।।

संतो से लगे पूछने, यहां कौन आएगा २
संतों ने कहा आज यहां राम आएंगे-२ ।।१।।

तुलसी ने सुना आज यहां राम आएंगे-२
चंदन को अपने हाथ से घिसकर लगाएंगे ।।२।।

चंदन को घिसते-घिसते बेहोशी आ गई २
बेहोशी आ गई तो कुछ नींद छा गई-२ ।।३।।

राम लक्ष्मण आए, आकर चले गए २
चंदन को अपने हाथ से लगा कर चले गए २ ।।४।।

तुलसी की खुली आंख, तो चन्दन नहीं पाया
संतों से लगे पूछने यहां कौन था आया
संतों ने कहां तुलसी तुम्हें क्या हो गया २
राम लक्ष्मण आए आकर चले गए
चन्दन को अपने हाथ से लगाकर चले गए ।।५।।

श्रीगंगा जी के पार

श्री गंगा जी के पार खड़े करतार राम रघुराई
केवट ने नाव चलाई ।।टेक।।

सीता जी मुन्दरी देते हैं, केवट न उसको लेते हैं,
तब लियो प्रेम से राम ने कंठ लगाई, केवट ने नाव चलाई ।।१।।

प्रभु आज मैं सब कुछ पाया है, यह जीवन सफल बनाया है,
धो लिए चरण रज यह मजदूरी पाई, केवट ने नाव चलाई ।।२।।

तुमने तो बड़ा उपकार किया, हमको जो तूने पार किया,
यह काम जो तेरा लेना है उतराई, केवट ने नाव चलाई ।।३।।

यह गंगा घाट जो मेरा है, वह भवसागर प्रभु तेरा है,
जब मैं भी आऊं तो देना पार लगाई, केवट ने नाव चलाई ।।४।।

फिर बोले राम मधुर बाणी, यह चाल तुम्हारी अब जानी,
हो गया आज से राम तेरा करज़ाई, केवट ने नाव चलाई ।:५।।

★

सबे सौदे में

सबे सौदे मैं कर कर हारियां,
राम संग सौदा कीता है ।।टेक।।

निर्गुण ब्रह्म दा ज्ञान सी औखा
गुरू मिले तां अनुभव कीता है ।।१।।

सतगुरु मेरे दी वाणी अमृत,
भर भर अमृत पीता है ।।२।।

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरया
एको अनुभव कीता है ।।३।।

सहज अवस्था दी सेज बिछो है
पूरण आनन्द लीता है ।।४।।

❊

सच्चे दिल नाल

सच्चे दिल नाल राम नूं ध्याके देख लै
ओ तां आनगे जरूर अज़माके देख लै ।।टेक।।

सच्चा प्रभु सदा तेरे अंग-संग वसदा
झाती मार के तूँ वेख तेरे अन्दर वसदा,
ओहदी प्रेम नाल जोत जगा के देख लै ॥१॥
कर प्यार चरणा नाल तैनूं प्यार करनगे
दुःखां दर्दां वाले सागरां तों पार करनगे,
अपनी नैया दा खिवैया तूं बनाके देख लै ॥२॥
दुःख राम नू सुनावीं टेर टेर बुल्लियां
अखां दोवें रखीं दर्शनां दे लई खुल्लियां
बन्दे मीरां वाली लगन लगा के देख लै ॥३॥

✻

घर घर होवे राम कथा

घर घर होवे राम कथा, वर्षा होवे अमृत दी ।टेक।

राम कथा अमृत वाणी, हुए ऋषि मुनि सुन सुन ज्ञानी ।
रुचि लागे तेरे चरनन को—वर्षा होवे अमृत दी ॥१॥

साडे जीवन दा ओ सहारा है ।
साडे मन दिया जानन हारा है ।
आस लगी तेरे दर्शन दी ॥२॥

चलो सब चल दर्शन कर आइये ।
ओथे अमृत दे घुट भर आइये ।
होई कृपा मेरे सतगुरु दी ॥३॥

ऊपर देवता फुल बरसादें ने ।
देव लोक विचों खुशियां मनांदे नै ।
कथा सुहानी मेरे रघुवर दी ॥४॥

✻

अज राम मेरे घर

अज राम मेरे घर आए ने, महाराज मेरे घर आए ने ।
में उच्चियां भागां वाली, इस कुटिया दे भाग सवाए ने ।टेक।

तेरे राह विच नैन बिछावंगी, ओनूं चन्दन तिलक लगावांगी,
ओ जगदे पालन हारे ने, अज आप मिलन मैंनूं आए ने ।।१।।

मैं तो चुन चुन बेर लियावांगी, नी मैं चख चख भोग लगावांगी,
नी ओ रज रज बेर पए खावंदे ने ।।२।।

नी मैं जिंदड़ी घोल घुमावांगी, ओदे राह विच नैन विछावांगी,
नी मैं रज रज दर्शन पावांगी ।।३।।

✻

जनम लिया मेरे रघुराई

जनम लिया मेरे रघुराई अवधपुरी में बहार आई ।। टेक ।।

कलियों ने घूंघट खोला भंवरा भी हंस हंस बोला
वर्षा ने रिमरिम लाई, अवध पुरी में बहार आई ।।१।।

बालक रूप निराला है मन को भाने वाला है ।
राम लखन दोनों भाई, अवधपुरी में बहार आई ।।२।।

मात कौशल्या बड़ भागी दशरथ की किस्मत जागी ।
धनुष तोड़ सीता ब्याही अवधपुरी में बहार आई ।।३।।

दासी अरजी करती है चरण कमल पर पड़ती है
चरणों में राखो रघुराई, अवधपुरी में बहार आई ।।४।।

✻

कृष्ण गोविन्द गोपाल

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो
मन को विषयों के विष से हटाते चलो ॥टेक॥

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें,
रात दिन इन को संयम के कोड़े लगें।
अपने रथ को सुमार्ग चलाते चलो ॥१॥

दुःख में तड़फो नहीं, सुख में फूलो नहीं,
प्राण जावें मगर नाम भूलो नहीं,
नाम धन का खज़ाना बढ़ाते चलो ॥२।

नाम जपते रहो काम करते रहो,
पाप की वासनाओं से डरते रहो,
प्रेम भक्ति के आंसू बहाते चलो ॥३॥

ख्याल आयेगा उनको कभी न कभी
भक्त पायेगा उनको कभी न कभी।
ऐसा विश्वास मनमें बिठाते चलो ॥४॥

*

मेरा दिल तो दीवाना

मेरा दिल तो दीवाना तेरे लिए तेरे लिए शाम तेरे लिए
मैं तो हो गया मस्ताना तेरे लिए ॥टेक॥

मथुरा भी ढूंढी गोकुल भी ढूंढा,
ढूंढा सारा ज़माना तेरे लिए ॥१॥

सब दर छोड़ के मैं तेरे दर आई,
हुन लांवो न बहाना मेरे लिए ॥२॥

यह संसार कंडयां दी वाड़ी, झूठी है सब रिश्तेदारी,
रूठा सारा जमाना मेरे लिए ॥३॥
यह संसार है सागर भारी, लग गई सानूं प्रेम बीमारी,
नहीं मुश्किल तराना तेरे लिए ॥४॥

शामां वे मेरी गागर

शामां वे मेरी गागर भर दे गागर भर मेरे सिर ते धर दे
चार कदम संग चल वे मेरी गागर भर दे ॥टेक॥

यह मत जान मैं हूं अकेली चतुर सखी मेरे संग वे ॥ १ ॥
यह मत जान मैं आली भोली, चतुर सखी मेरे संग वे ॥ २ ॥
यह मत जान मैं गांव की छोरी, बरसाने मेरा घर वे ॥ ३ ॥
यह मत जान मैं हूं कंवारी, शाम सुन्दर मेरा वर वे ॥ ४ ॥

आजा शाम जी

आ जा शाम जी, सौं तैनूं प्रेम दी, हुन आजा शाम जी
तूं की जानें किवे कटियां घड़ियां इन्तज़ार दी ॥ टेक ॥

इक दिन राती सुपने दे विच, आया श्याम मुरारी,
मुखड़ा उस दा देख के मैं, सुध बुध भुल गई सारी
डर दी मारी अख न खोलां, सपना न हो जाए
मुश्किल दे नाल हथ विच आया, फेर चला न जाए ॥ १ ॥
लुक लुक रोवां लुक लुक हसां, ऐसी हालत होई,
राधा तेरे शाम नू आंदयां, अजे शाम न होई।
राधा आई मोहन प्यारे, ओवी वाजां मार दी ॥ २ ॥

तूं की जाने हालत मेरी, मैं जोगन होई जोबन
दुनियां दा मैं सब कुछ छड के, पा लया है मोहन
दर्शन करके शाम दा मैं तन मन अपना वार दो ॥ ३ ॥

मेरे बाल कन्हैया

मेरे बाल कन्हैया, ओ मेरे कृष्ण कन्हैया,
आज है जन्म तेरा, आज है जन्म तेरा ॥टेक॥

थुरा गूंज उठी तेरी आवाज़ से, गोकुल गूंज उठी तेरी झनकार से,
ग्वाले ढोल बजाए, सखियां मंगल गाएं ॥१॥

बाबा नन्द नाचे, नाले मैया नाचे,
नाले ब्रह्मा नाचे, नाले विष्णु नाचे,
काले नागों वाला, मेरा भोला नाचे ॥२॥

सखियां झूला झुलाए, नाले मंगल गाएं,
मैया लाल दे-मुखड़े तो वारे वारे जाए,
वारे जाए नाले बलिहारे जाए, आज है जन्म तेरा ॥३॥

जन्म लिया मन मोहन

म लिया मन मोहन जी, पीर कटी देखो भक्तन को ॥टेक॥

जे़ल किवाड़े टूट गए, भाग्य कंस के फूट गए,
क़िस्मत जागी दुखियन की, पीर कटी देखो भक्तन की ॥१॥

जग को नाच नचाए जो, खेले यशोदा की गोदी वो,
लीला है नन्दनन्दन की, पीर कटी देखो भक्तन की ॥२॥

पूतना का संहार किया, ग्वालों के संग प्यार किया,
पूरण हुई आशा मन की, पीर कटी देखो भक्तन की ॥३॥
चक्र देखकर पापी डरे, देवता जय जयकार करे,
हुई वर्षा तब फलन की, पीर कटी देखो भक्तन की ॥४॥

चलो चलो नी सहेलियो

चलो चलो नी सहेलियो, शाम दी गली,
हारां वाले दी गली, हीरे मोतियाँ जड़ी,
जित्थे राधा जी खड़ी ...... ॥टेक॥

मथुरा में शाम ने जन्म लिया है, गोकुल में है धूम मची ॥१॥
मात देवकी बेटा जायो, यशोदा माँ की गोद भरी ॥२॥
तीन लोक के वाली जग में आए,
जग में है देखो धूम मची ॥३॥
यमुना तट शाम गऊआं चरावे,
ग्वालों की टोली संग में खड़ी ॥४॥
वृन्दावन में शाम रास रचाए,
राधा रानी है पास खड़ी ॥५॥

मेरे नयना विच शाम जी

मेरे नयनां विच शाम जी ने डेरा ला लिया,
नयन खोलां किवें, हां नयन खोलां किवें ॥टेक॥

नयन खोल दिते लोकी मैनूं पुछदे हां पुछदे,
नी तू हीरा कित्थों लभा सानूं दसदे-हाँ दसदे,
ऐना सुन के मैं पलकां नूं होर कसया, नयन खोला किवे ॥१॥

सानूं श्याम लभन दी लोड़ नां, हां लोड़ नां,
बंसी वाले दे बिना कोई होर नां, कोई होर नां,
मेरे सत्गुरु सारा मैनूं भेद दसया, नयन खोला किवे ।।२।।

मैनूं सपने च शाम राती आ गए, हां आ गए,
मेरी मांग विच सुआ-रंग पा गए, हाँ पा गए,
मैं तां हो गई सुहागिन, अंग अंग रंगिया, नयन खोला किवे ।।३।।

सानूं शाम जी ने साड़ी दित्ती नामं दी, हां नाम दी,
उते गोटा ते किनारी लावां ज्ञान दी, हां ध्यान दी,
मेरी रग रग विच ओदा वास हो गया नयन खोलां किवे ।।४।।

✻

वैकुण्ठा तों वी सोहणा

वैकुण्ठां तों वी सोहणां मेरे श्याम दा द्वारा,
जेड़ा इक बारी आवे, ओते आवंदा दोबारा ।।टेक।।

जित्थे भगवत आप विराजे, ओत्थे कादियां कमियां,
दौर खुशी दे झूमदे, ते आंदियां न गमियां
गूंजे धरती आकाश, जदों बोलया जयकारा ।।१।।

सारे जग दे मालिक तुस्सी, तुहाडा कुल खजाना,
रहमत कर के कट देओ, मेरे बन्धन वाला खाना,
सच्चे नाम तो बिना दित्ता किसे न सहारा ।।२।।

जिधर देखा तूं ही दिस्से, तेरा रोशन जलवा,
जे तूं मेरा बन जावे ते, दुनियां दी की परवाह,
जेड़ा दर उत्ते आवे, ओइयो देखदा नज़ारा ।।३।।

✻

शाम्मसुन्दर छलिए ने

इस शाम सुन्दर छलिए ने मैनूं दीवाना कीता,
हर वेले दिल घबराए, ऐसा मस्तानां कीता ।।टेक।।

मैं केड़ा बहाना लावां, जो दर्शन शाम दा पावां,
घर वाले मैनूं रोकन, मैं केड़ा बहाना लावां,
जमुना तो जल भर ल्यावां, मैं ऐही बहाना कीता ।।१।।

चुक घड़ा मैं सिर ते टुर पई, इट शाम घड़े ते मारी
मेरे सिर तो वग गया पानी, मेरी भिज गई सारी साड़ी
मैं हा हा कार मचाया, तूं शाम ए की कीता ।।२।।

मैं हाय हाय कुरलावां. शाम तेरे पिछे दौड़ दी जावां,
जा आखां तेरी मां नूं, तूं शाम लाडला कीता ।।३।।

मैं अपना कीता पाया, क्यों दोष शाम ते लाया,
मैं आपे वाजां मारियां, आ घड़ा चुका जा मेरा ।।४।।

तेरी गोकलिया न जाऊं

तेरी गोकलियाँ न जाऊं, झगड़ा काहे को करे,
तुझे गोकलियां ले जाऊं, अड़ियां काहे को करे,
तेरे सुन्दर दर्शन पाऊं, झगड़ा काहे को करे ।।टेक।।

मेरी बहियां न मरोड़, मैं ता रहिआं हथ जोड़,
तेरी गोकलियां न जाऊं, झगड़ा काहे को करे ।।१।।
लपट झपट तूं मत कर कान्हां, फटे हमारे चीर,
मैं राने वृष भान की बिटो, तेरी जात अहीर,
अर्ज करां हथ जोड़, झगड़ा काहे को करे ।।२।।

मैं तेरा तूं मेरी राधिके, लोगां नूं क्यों सुनाइये,
चल गोकुल विच पींगां पाइये, रल मिल झूटे खाइये
नी मैं हर दम तेरे कोल, झगड़ा काहे को करे ॥३॥

वसुदेव का बेटा है तूं घर-२ डाके मारे,
कदी सानूं गलियां विच रोके, कदीओ सानूं झाड़े,
शाम मक्खनां दा चोर, चोरी काहे को करे ॥४॥

नन्द गांव (मथुरा पुरी) का मैं हूं राजा, मत कहो मुझे चोर,
ख़बर दार तूं समझ के बोलीं चोर होवे कोई होर,
नी मैं प्रेम तेरे विच भुलया, झगड़ा काहे को करे ॥५॥

लोग कहे वसुदेव का बेटा, नन्द कहे सुत मेरा,
अजे तक ऐ पता न चलया, असली मां पिओ केड़ा,
श्याम गऊआं दा रखवाला, गलियां काहे को फिरे ॥६॥

न कोई मेरा मात पिता है, न मैं किसी का बेटा,
वसुदेव और नन्द बावे नूं ऐवे पिआ भुलेखा,
नी मैं आपे खेल रचाया, झगड़ा काहे को करे ॥७॥

❋

मेरा तन रंग दे

मेरा तन रंग दे मेरा मन रंग दे
मेरे बांके बिहारी अंग अंग रंग दे ॥टेक॥

किसे दा तन रंगया किसे दा अंग रंगया,
रंगन वाले ने रंगीला मेरा मन रंगया ॥१॥

किसे महल मंगाया किसे अटारी मंगी ए,
मैं ता शाम को लों नाम दी खुमारी मंगी ए, ॥२॥

किसी ने तरना मंगया, किसे किनारा मंगया,
मैं तों शाम कोलों शाम दा सहारा मंगया ॥३॥

किसे ने हार मंगया किसे शृंगार मंगया,
मैं तो शाम कोलों थोड़ा जया प्यार मंगया ।।४।।

किसे ने प्रेम मंगया, किसेने प्यार मंगया,
मैं तो सांवरे तो सांवरे दा दीदार मंगया ।।५।।

✻

मैं सुनां प्रेम दे नाल

मैं सुनां प्रेम दे नाल मुरली मोहन दी,
जय हो मुरलीमोहन दी,
मेरा कर गई मन खुशहाल मुरली मोहन दी,
जय हो मुरलो मोहन दी ।।टेक।।

मत्थे मुकट सुहावे, तक तक चन्न शरमावे, जय हो,
यमुना कण्डे आया, मात यशोदा जाया, जय हो ।।१।।

इस मुरली नूं राधा सुनयां, हो गई ओ मस्तानी,
तन मन दी ओनूं सुध न रही, हो गई ओ दीवानी ।।२।।

इस मुरली नूं सखियां सुनयां, दौड़ दौड़ के आइयां,
दूध दही ते माखन मिश्री, मोहन तांई ल्याइयां ।।३।।

इस मुरली नूं जद वजाया, तान अजब सुनाई,
राधा नूं छड गऊआं सारियां शाम दे चरनी आई ।।४।।

इस बंसी नूं शाम बजाया, रास अजब रचाई,
देवी देवते सारे मिल के, फलां दी वर्षा लाई ।।५।।

✻

किधरे मिल जाए

किधरे मिल जाए शाम प्यारा, पत्ता पत्ता छान मारया,
किधरे मिल जाए गोपियां दा प्यारा,
पत्ता पत्ता छान मारया ।।टेक।।

जिन्द जान कीती नन्दलाल दे हवाले मैं,
दुध दे भुलेखे पी गई जहर दे प्याले मैं ।
अपने रूप दा दे गया लिशकारा, पत्ता पत्ता छान मारया ।।१।।

बड़ा ए कठोर नी सतावे जानी जान के,
दे गया दिलासा मैनूं सुपने च आन के ।
नाले मिलने दा दे गया लारा, पत्ता पत्ता छान मारया ।।२।।

सुबह शाम शाम शाम गान मेरे घुंघरू,
रूठे हुए शाम नुं मनान मेरे घुंघरू ।
ओदे चरणां तो तन मन वारां, पत्ता पत्ता छान मारया ।।३।।

व्रज दिया वासिया न तोड़ आशा मेरियां,
पैंडे बड़े लम्बे ते रातां ने अन्धेरिया ।
असां वेखना मुखड़ा प्यारा, पत्ता पत्ता छान मारिया ।।४।।

प्रभु चरणां नूं छू के

प्रभु चरणां नूं छू के कसम असी खावांगे,
होवे तेरी किरपा तोड़ निभावांगे ।।टेक।।

डूंगा प्रेम दा सागर है,
जिनां डुब्बी मार लई ओनां भर लई गागर है ।
असी वी ऐत्थो गागर भर ले जावांगे ।।१।।

जग रूसदा ए ते रूस जाए,
आपे जग मन जाएगा मेरा हारां वाला मन जाए ।
असी ते हारां वाले नूं मीत बनावांगे ।।२।।
गंडां प्रेम दीयां पक्कियां ने,
ऐ नहि टुट्टन लगियां जेड़ियां कस के बंधियां ने ।
ऐनां गंडां नूं होर वी पक्कियां पावांगे ।।३।।
जेहड़े द्वार ते आंदे ने, दर्शन पाकर खुशियां मनांदे ने ।
असी वी अपना मन खुशहाल बनावांगे ।।४।।

पीती पीती पीती अज मैं

पीती पीती पीती, अज मैं पीती ए,
नाम कटोरी भर भर के, अज पीती ए ।।टेक।।

मेरे श्याम-दयाल ने देखो, सारे जग विच धुम्मां पाइयां,
उन्हां तारे लखां पापी, कट गइयां कर्मा दीयां फाइयां,
ऐ ओदी नीति ए ।।१।।
इस श्याम तो सदके जावां, जिस जाम पिलाया मैनूं,
हुन मस्ती दे विच झूमा, जिस मस्त बनाया मैनूं,
श्याम संग बीती है ।।२।।
ओ दाम कोई न मंगदा, भर भर के पिलाए जांदा,
निष्काम कर्म ओ करदा, और सब नूं मस्त बनांदा,
अजब ओदी रीति ए ।।३।।
मैं रब नूं वेखन वाली, ए अख गुरां तो लीती,
फिर चरणां दे विच देखी, सारी दुनियां काबू कीती,
मेरे नाल बीती ए ।।४।।
मैं सदा चरणां विच रहंदा, मैं मौत कोलों नहीं डरदा,
ऐ नाम प्याली पी के, सदा हसदा ते खुश रहंदा,
ऐ ओ दी प्रीति ए ।।५।।

बोलो बोलो रे भगवान

बोलो बोलो रे भगवान मेरे बोलो,
मैं तुम्हारी हूं तुम मेरे होलो ॥टेक॥

धन्ने भक्त ने तुम्हें ध्याया, पत्थरां विचों दर्श दिखाया ।
मेरी वी बारी बोलो ॥१॥
द्रुपद सुता ने तुम्हें ध्याया, पल विच उसदा चीर बढ़ाया ।
मेरी वी बारी बोलो ॥२॥
प्रहलाद भक्त ने तुम्हें ध्याया, थम्भ फाड़ प्रभु दर्श दिखाया ।
मेरी वी बारी बोलो ॥३॥
दीनाबन्धु नाम तुम्हारा, जिसने पुकारा उसको उबारा ।
हृदय के पट खोलो ॥४॥

जेड़ा दर तें सवाली तेरे आए

जेड़ा दर ते सवाली तेरे आए, उसे दीयां भरे झोलियां,
मेरे दाता जो ओसे दीयां भरे झोलियां ॥टेक॥

निश्चय वाले सेवकां ने दाता तैनूं पा लिया,
जेड़ा दर आया ओनूं अपना बना लिया,
जेड़ा निश्चय दे नाल ऐथे आवें, ओसे दियां भरे झोलियां ॥१॥
तेरे चरणाँ दे विच गंगा पई वगदी,
तेरे मुखड़े ते नुरानी जोत जगदी,
जेड़ा प्रेम दे नाल ध्यावे ओसे दियां भरे झोलियां ॥२॥
देख देख लीला तेरी, मन नइयों रजदा,
तेरी शोभा न्यारी, तेरा रूप प्यारा लगदा,
जेहड़ा श्रद्धा दे नाल ऐथे आवे, ओसे दी भरे झोलियां ॥३॥

दासी उत्ते दया करो, होके मेहरबान जी,
तार दित्ता दाता तुस्सी सारा जहान जी,
सारा जग महिमा गावे, ओसे दियां भरे झोलियां ॥४॥

झूलदा रहे

झूलदा रहे २, राधेश्याम दा झण्डा झूलदा रहे ॥टेक॥

सबसे ऊंचा सबसे सुच्चा, कोई न इसमें विकार ॥१॥
आदि भी एहो अन्त भी एहो, मध्य में एहदा प्रकाश ॥२॥

जड़ां पाताल विच, मूल है आकाश विच,
कोई विरला पहुंचनहार ॥३॥
यह झण्डा मीरा ने चुकया, कुलजन पुरजन दा डर मुकया,
अंग संग खेलनहार ॥४॥

शाम सुन्दर दा दर्शन पाकर

शाम सुन्दर दा दर्शन पाकर,
तन मन आनन्द छा गया ॥टेक॥

ऐसी उसदी चमक निराली, मन अन्दर छाई हरियाली ।
जिन्दड़ी बन गई कर्मा वाली, सुत्ते होए भाग जगा गया ॥१॥

रोम रोम होइयां उजियार, जित कित देखां कृष्ण मुरार ।
ऐसी खिड़ गई है गुलजार, अंग संग दर्शन पा लिया ॥२॥

दुनियां से हो गई बदरंग, शाम रंगन विच हो गई रंग ।
कर न सके हुन कोई भंग, पक्का रंग चढ़ा गया ॥३॥

दासी दी है अकथ कहानी, कह न सके मन बुद्धि वाणी ।
अनुभव करे उसी ने जानी, जोती जोत मिला गया ॥४॥

राधे कौन से अच्छे पुन्य किए

राधे कौन से अच्छे पुन्य किए,
हरि रोज़ तेरे घर आते हैं ।।टेक।।

जब पूजा करने जाती हो, हरि फूल चढ़ाने आते हैं ।।१।।
जब जमुना नहाने जाती हो, हरि चीर चुराने आते हैं ।।२।।
जब जल भरने को जाती हो, हरि मटकी उठाने आते हैं ।।३।।
जब दहियां बिलोने जाती हो, हरि माखन खाने आते हैं ।।४।।
जब कुंज गली में जाती हो, हरि रास रचाने आते हैं ।।५।।
जब अकड़ २ कर चलती हो, हरि आप मनाने आते हैं ।।६।।

जरा कुण्डलां नूँ

जरा कुण्डलां नूं सरकावे, मैनूं मुख देखन दा चावे ।।टेक।।

मीराबाई ने प्रीतां लाइयां, शाम हस हस तोड़ निभाइयां,
हुन साडी वी तोड़ निभावे ।।१।।
मैं बैठी हूं आस लगाए, मेरे श्याम अजे वी न आए,
हुन मेरे वल फेरा पावे ।।२।।
भिलनी बाई बेर ल्यावे, राम हस हस भोग लगावे,
हुन सानूं वीं दर्श दिखावे ।।३।।

आज ब्रज में होली

आज ब्रज में होली रे रसिया,
होली होली होली बरजोरी रे रसिया ।।टेक।।
इत ते आए कृष्ण कन्हाई, उत ते राधा गोरी रे रसिया ।।१।।

उड़त अबीर गुलाल कुंकमा, केसर गागर डोली रे रसिया ।।२।।
गाजत ताल मृदंग बांसुरी, और नगाड़े की जोड़ी रे रसिया ।।३।।

कोई शाम का दिवाना तो बने

कोई शाम का दिवाना तो बने,
दिवाना तो बने मस्ताना तो बने ।।टेक।।

राणा कहने लगा मीरा से, श्याम कहना छोड़ दे
मीरा कहने लगी राणा से श्याम नाहिं छूटेगा,
कोई मुझ को मार दे, घन श्याम नाहीं छूटेगा ।।
चल पड़ी रातों को मीरा, वृंदावन के धाम को ।
मुख से वह गाने लगी, अपने हरी के नाम को ।।
गोविन्द जै जै गोपाल जै जै ।।१।।.........

तत्ते थम्भे से लगाया, पिता ने भक्त प्रहलाद को ।
भक्त सारे रो पड़े, तरस ना आया बाप को ।
भक्त बच्चा डर ना जाए, सोचा उस भगवान ने ।
चींटी बनकर खम्भे पर. चक्कर लगाया शाम ने ।
जब देखा अपने प्रभु को, भक्त भी रोने लगा ।
मुख से वह गाने लगा अपने प्रभु के नाम को
दीना बन्धु दीना नाथ, मेरी डोरी तेरे हाथ ।।२।।
महलों में पली थी मीरा, आज जोगन बन गई ।
अपने सुन्दर शाम को आज ढूंढे गली गली
हाथ में खड़ताल लेकर, मुख से वह गाने लगी,
मेरे सुन्दर सांवरे मैं आज तेरी हो गई ।
जब तक चमके चाँद सितारे, कह गई दुनियां सारी रे,
जय गोविन्दा जय गोपाला, मीरा के गिरधारी रे
गिरिधर मेरा मैं गिरिधर की, सतगुरु मेरा मैं सतगुरू की ।।३।।

रंग दे चुनरिया

रंग दे चुनरिया, रंग दे चुनरिया,
शाम पिया मोरी रंग दे चुनरिया । टेक।।

ऐसी रंग दे रंग नहीं छूटे, धोबी धोये चाहे सारी उमरिया ।।१।।

लाल न रंगाऊ मैं हरी न रंगाऊ,
अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया ।।२।।

बिना रंगाये मैं तो घर नहीं जाऊंगी,
बीत जाए चाहे सारी उमरियां ।।३।।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
हरि चरणन में लागी रे नज़रिया ।।४।।

*

दर तेरे अज लगियां रौनकां

दर तेरे अज लगियां रौनकां,
बरस रहया है रंग कृष्णा (मोहना)
पूरी कर दे मेरी मंग मोहना (कृष्णा) ।।टेक।।

इको वर मंगदियां दर तेरे आनके,
दर्श दिखा दे तू निमाणी मैनूं जानके ।
तेरे बिना होर कोई पार ना लगावन वाला,
हर दम रहो अंग संग शामा ।।१।।

सभा विच द्रोपदी दी लाजनूं नूं बचाया सी ।
साड़ियां दा ढेर इको पल विच लाया सी ।
तक तक पापी खड़े रह गए पत्थर वागो दंग शामा ।।२।।

जहर प्याला जदों मीरां नूं पिलाया सी ।
तेरा नाम लैके मीरां मुख नाल लाया सी ।
पानी वांगो पीके मीरां मुख तो कहन लगी ।
नाकर सानूं तंग शामा ।।३।।

भक्तां दे दुख विच होवना सहाई तूं ।
मेरी वारी काहनूं शामा दे गया जुदाई तूं ।
कदे ना सुनाई मैनूं बंसरी दी तान तूं ।
हो गया कानं मस्त शामा ।।४।।

आए ने गोपाल

आए ने गोपाल ब्रज सब नूं वधाई ए २ ।।टेक।।

भाद्रों दी काली रात, शाम मेरे आए ने ।
ब्रज दियां गोपियां दे भाग सवाए ने,
फुलां वाली वर्षा ने रिम झिम लाई ए ।।१।।

निक्का जया शाम मेरा, अज घर आया ए,
ब्रज दियां गोपियां ने ब्रज नूं सजाया ए,
यमुना दे कण्डे उते रास रचाई ए ।।२।।

निक्का जया शाम नाले हंसदा ते रोवंदा,
ब्रज दियां गोपियाँ दे मन नूं चुरां बदा,
यशोदा मैया नूं, प्रेम लीला दिखाई ए ।।३।।

ब्रज मथुरा दे विच

ब्रज मथुरा दे विच अवतार हो गया शाम निक्का जया,
सुन सुन के सुखी संसार हो गया, शाम निक्का जया ।टेक।

माता देवकी ने हृदय नाल ला लया,
वसुदेव जी ने टोकरे विच पालया,
छड मथुरा नूं गोकुल तैयार हो गया शाम निक्का जया ।।१।।

शाम जेलां विचों चोरी चोरी चलया,
किथे जमया ते किथे जा पलया,
ओ यशोदा दे वेहड़े दा शृंगार हो गया शाम निक्का जया ।।२।।

ब्रज मथुरा दे लोग खुश होवंदे,
दुष्ट अपने नसीबां नूं रोवंदे,
कंस अपनी जान तो बेजार हो गया शाम निक्का जया ।।३।।

जदों पूतना सी दूध पिलावंदी,
पई अपने ही मन नूं ललचावंदी,
प्राण कड के ते छाती ते सवार हो गया शाम निक्का जया ।।४।।

वधाई

यशोदा मैया जी तोहे लाखों लाख वधाई ।
पलना झूल रहे तेरे कुंवर कन्हाई ।।टेक।।

कदम्ब की छइया यमुना तीरे, परत फुवारे धीरे धीरे ।
बिजली चमके री मन्द मन्द मुस्काई ।।१।।

मइया झूलावे लाला झूले, नन्दबाबा हैं फूले फूले,
शोभा झूले की मैय्या वरनी न जाई ।।२।।

युग युग जीवे तेरा कुंवर कन्हैया, मैं बलि जाऊं कृष्ण कन्हैया,
नन्दरानी जा साडी ग्रासीस न खाली जाई ।।३।।

*

भागवत भोग पर

धन्य भाग धन्य भाग, धन्य भाग्य जी,
अज सारो संगत दे धन भाग्य जी ।।टेक।।

जिन्हां भागवत यज्ञ रचाया, ग्राप सुनया ते सबनूं सुनाया,
कट गए कट गए, तीन ताप जी ।।१।।
जिन्हां सोहणा साज सजाया, उते प्रभु जी दा आसन लाया,
अज ग्रोन्हां प्रेमियां दे धन भाग जी ।।२।।
शुकदेव जी ने भागवत सुनाया, राजा परीक्षित का मोह मिटाया,
मिट गया मरने दा सारा ताप जी ।।३।।
माता देवकी ने कृष्ण जी जाया, वसुदेव जी ने टोकरे विच पाया,
अज नन्द यशोदा दे जागे भाग जी ।।४।।
ग्राग्रो बहिनों सुनिए यह पाठ जी,
फिर आविए न ऐत्थे जन्म धार जी,
पूरे गुरां नूं करिए नमस्कार जी ।।५।।

*

भज मन राम चरण सुखदाई

भज मन राम चरण सुखदाई ।।टेक।।

जिन चरणन ते निकसी सुरसरि, शंकर जटा समाई ।
जटा संकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारन आई ।।१।।

जिन चरणन की चरणपादुका, भरत रहे लिव लाई ।
सोई चरण केवट धोइ लीन्हों, तब हरि नाव चलाई ।।२।।

सोई चरण संतन जन सेवत, सदा रहत सुखदाई,
सोई चरण गौतम ऋषि नारी, परस परम पद पाई ।।३।।

दण्डक वन प्रभु पावन कीन्हों, ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी, कनक मृगा संग धाई ।।४।।

कपि सुग्रीव बन्धु भए व्याकुल, तिन जय छत्र फिराई ।
रिपु को अनुज विभाषन निशिचर, परसत लंका पाई ।।५।।

शिव सन कादिक अरू ब्रह्मादिक. शेष सहस मुख गाई,
तुलसीदास मारूत सुत की प्रभु, निज मुख करत बड़ाई ।।६।।

हनुमान बजरंगी प्यारे दया करो

महावीर बजरंगी प्यारे दया करो ।।टेक।।

हाथ में सोटा लाल लंगोटा, पूंछल गई ए असमान ।।१।।

तेल सिन्दूर जाँके अंग विराजे, मुख पर लाल निशान ।।२।।

सिया को सुधि राजा राम पठायो, लंका जली हनुमान ।।३।।

द्रोण गिरि पर्वत ले आयो, लक्ष्मण को दीजो प्राण ।।४।।

अहि रावण को मार मिटायो, देवी तां पठयो पाताल ।।५।।

लंका को जीत राजा राम घर आये, चढ़ कर पुष्प विमान ।।६।।

अंजनी का पुत्र श्री राम जी का सेवक, पवन पुत्र हनुमान ।।७।।

संकट मोचन नाम तिहारा, भक्त करन तेरा ध्यान ।।८।।

जो कोई महावीर जी की महिमा गावे,
लागे न यम वाला बाण ।।६।।

जो कोई मारूत सुत की महिमा गावे,
लागे न यम वाला बाण ।।१०।।

✲

इक दिन वह भोले भण्डारी

इक दिन वह भोले भण्डारी, बनकर के व्रजनारी,
रास में आ गए,

पार्वती ने मना किया पर न माने त्रिपुरारी,
रास में आ गए ।।टेक।।

बंसी बजा कर मोहन, रास करे हैं व्रज धाम में ।
मोहन संग राधा नाचे, मैं भी नाचूंगा तेरे संग में ।
रास रची है ब्रज में भारी, हमें दिखाओ प्यारी ।।१।।

पार्वती बोली तुझे कैसे ले जाऊं मैं रास में ।
मोहन के सिवाय कोई पुरुष न होगा उस रास में ।
हंसी उड़ाएंगी सब सखियां, मानो बात हमारी ।।२।।

ऐसा बना लो मुझे कोई न जाने इस राज़ को ।
मैं हूं सहेली तेरी, ऐसा बनाना ब्रजराज को ।
बना के जूड़ा पहन के साड़ी, चाल चले मस्तानी।।३।।

मोहन ने देखा, तब शोभा बड़ी है ब्रज रास की ।
बंसी बजाई मोहन सुधि विसराई भोले नाथ की ।
खिसक गई जब सिर से साड़ी मुस्काए बनवारी ।।४।।

सुन मेरे भोले बाबा, तब से ही ब्रज में तेरो धाम है,
हे मेरे भोले बाबा, तब से गोपेश्वर तेरो नाम है।
सुने सुनाए जो भी इसको इच्छा पूरण हो जाए ॥५॥

ओ३म् नमः शिवाय

ॐ नमः शिवाय, नित गाओ धूम मचाओ रे,
शिव शंकर का ध्यान लगाओ,
भवसागर तर जाओ रे ॥टेक॥

शिवशंकर की पूजा करने, शिव मन्दिर पर जाओ रे,
गंगाजल अभिषेक कराओ, शिव शिव रटन लगाओ रे ॥१॥

बिल्व पत्र अक्षत चंदन से, भोले को खूब रिझाओ रे,
तन मन धन न्योच्छावर कर दो, ध्यान मगन हो जाओ रे ॥२॥

झूठी काया झूठी माया, मिथ्या निश्चय लाओ रे,
चार दिनों की खिली चांदनी, अन्त समय पछताओ रे ॥३॥

शिव चरणों में सब जन आओ, अविचल पदवी पाओ रे,
राजेश्वर शिव नाम जपो, सब जीवन सफल बनाओ रे ॥४॥

शोभा कहां तक कहूं

शीश गंगा बहे, अंग भस्मी रमे न्यारी न्यारी,
शोभा कहां तक कहूं शिव तुम्हारी ॥टेक॥

लिपटे रहत गले विच काले, पोते विषों के भर भर प्याले,
पी धतूरा कली, मुण्ड माला डली, खल संहारी ॥१॥

शीश पर चन्द्रशेखर चमकता, संग में लोचन है सारा छलकता,
धन्य है गौरांपति, धन्य हैं योगी यति, डमरू धारी ।।२।।

पहने बाघ की आप हैं छाला, नागफणि कर्ण मुण्ड है माला,
करते सदा ध्यान हैं, राम गुणगान हैं, सदा त्रिपुरारी ।।३।।

ध्यान शंकर का कोई लगावे, होकर अटल मोक्षपद पावे,
गाता रघुनाथ है जोड़ के हाथ है, यह अनाड़ी ।।४।।

*

पहले शेरां वाली मां नूं

पहले शेरां वाली मां नूं ध्याइये,
जदों वी कोई कम करिए ।।टेक।।

सब दियां आसां पूरियां कर दी, झोलियां नाल मुरादां भर दी,
एहदे चरणां ते शीश निवाइये ।।१।।

रहमत दे खोले भण्डारे, सब दे बिगड़े काम संवारे,
एहदा लख लख शुकर मनाइये ।।२।।

दिल विच मां दी जोत जगा के, हथ जोड़ के शीश झुका के,
पहले इक जय-कारा लाइए, ।।३।।

मंदे कम कदी ना करिए, मां दे कहर गज़ब तो डरिए ।
पहले दिल नूं एह समझाइए, जदों वी कोई कम करिए ।।४।।

*

ओ भागां वाले ने

ओ भागां वाले ने जिन्हां ने मात वैष्णो ध्यालई,
ओ भागां वाले ने जिन्हां ने अष्टमी जोत जगालई ।टेक।

भाग उन्हां दे कौन सलावे, महिमा उन्हां दी कही ना जावे,
दिल विच निश्चय धार जिन्हां ने, भेंट प्रेम दी चढ़ा लई ।।१।।

सारी दुनियां दी है वाली, अष्ट भुजी मां शेरां वाली,
ओह कर दी है बेड़ा पार, जिन्हां ने सच्ची प्रीत लगालई ।।२।।

आके अज अजमा के वेखो, मां नाल लगन लगा के वेखो,
ओ भर देवे भण्डार, जिन्हां ने माँ नूं अर्ज सुना लई ।।३।।

शुद्ध भावना चाहे मैया, याद करो तां आवे मैया,
ओ सुखी वसन घर बार, जिन्हां ने जय जय कार बुला लई ।।४।।

श्रद्धा भक्ति पथ है उसदा, भक्तां दे सिर हथ है उसदा
कदे ना होवे हार, जिन्हां ने मात वैष्णो ध्यालई ।।५।।

तेरे नाम दी जोत जगाई

तेरे नाम दी जोत जगाई जय माता दी बोल बोल के,
मंगां दर्शन अज महामाई, जय माता दी बोल बोल के ।टेक।

न जाना कुछ पूजा करनी, दुःख दूर करे मां दुःख हरनी ।
तेरे दर दाती अलख जगाई, जय माता दी बोल बोल के ।।२।।

आए हां दर तेरे आस लगा के, भार गुनाहाँ दा सिर ते चाके ।
पादे खैर झोली माँ बिछाई, जय माता दी बोल बोल के ।।३।।

मेहर माँ जिसते तेरी होई, थोड़ न रहंदी उसनूं कोई ।
मैं वी आया अज तेरे दर माई, जय माता दी बोल बोल के ।।४।।

बिना दर्शन किवें जीवे निर्बल नहिं छडनी तेरे दर दी सम्बल ।
गल दिल दी मैं खोल सुनाई, जय माता दी बोल बोल के ।।५।।

दे मेहरां दा छिट्टा

दे मेहरां दा छिट्टा दातिए, आवां तेरे दरबारमां,
एह मन उड़दा उड़दा दातिए, मंगे तेरा दीदार मां।टेक।

चरणां दे विच गंगा वगदी, मैं मल मल पया नहावां,
अन्दर मेरे घोर अन्धेरा, किवें मैं दर्शन पावां
किवें मैं दर्शन पांवा, दातिए आवां तेरे दरबार मां ॥१॥

दर तेरे ते आके भवानी, झुक गया मस्तक मेरा,
शेर सवारी प्यारी लगदी, पर्वत लाया डेरा,
चारों तरफ पए झण्डे झूलदे, हो रही जय जय कार मां ॥२॥

इक हथ विच त्रिशूल सोहे मां, दूजे हथ विच खण्डा,
भवन तेरे दी शोभा वधावे, लगे धर्म दा झण्डा,
मोह माया विच फस के दातिए, भुल्ल गया दरबार माँ ॥३॥

सूर्य चांद तारे चमके, चमके ज्वाला ज्योति,
तेरे भक्त ने तेरी मालां सदरांनाल परोती,
भव सागर विच अटकया बेड़ा, हुन ते कर दयो पार मां ॥४॥

✲

मैं करां साल दे साल

मैं करां साल दे साल दर्शन मैया दा,
मैं करां प्रीतां नाल दर्शन मैया दा,
सोहणा दर्शन मैया दा, वाह-२ दर्शन मैय्या दा
होन्दां भागां नाल दर्शन मैय्या दा ॥टेक॥

मां मेरी दा भवन रंगीला, विच पहाड़ां सजदा
बाग मैय्या दे कोयल बोले, शेर जंगल विच गजदा

शेर दी करो सवारी······जय हो
लगदी प्यारी प्यारी······जय हो
प्रेम नाल दर्शन पाओ······जय हो
है सुन्दर भवन कमाल ॥१॥
माता दे दरबार जेड़ा प्रेमी प्रेम नाल आवे
भुख प्यास मिट जान्दी ओदी, मंगे मनोरथ पावे
मैय्या दा भवन निराला······जय हो
है सुन्दर सब तो आला······जय हो
जल दे चलन फुहारे······जय हो
नहांदे संत प्यारे······जय हो
ओत्थे झुलदे झंडे लाल ॥२॥
मां अर्ध कुंवारी······जय हो
मां मेहरां वाली······जय हो
मां झोलियां भर दी······जय हो
मां दी ज्योति जगाओ······जय हो
सोहणा दर्शन पाओ······जय हो
सारे जग दी सवाली······जय हो
पूरी कर दी आसां······जय हो
दर्शन पा खुशियाँ मनावो······जय हो
भेटां प्रेम नाल गाओ······जय हो
भक्तों फुल बरसाओ······जय हो
सिर ते छत्र सोने दा······जय हो
दर्शन प्रेम नाल पाओ······जय हो

शीश सारे झुकाओ·····जय हो
एत्थों सब कुछ मिलदा·····जय हो

झोलियाँ भर २ जाओ ·····जय हो
भक्तों फूल बरसाओ·····जय हो

ऐसी मति दो भगवन्

ऐसी मती दो भगवन्, तव मोक्षधाम पाऊं ।
देहात्म ज्ञान बुद्धि, मन से तुम्हें हो ध्याऊं ।।टेक।।

नहिं धर्म कर्म निष्ठा, योगादि ज्ञान मुझ में,
प्रभु दिव्य भक्ति दे दो, तव मोक्ष धाम पाऊं ।।१।।

नहिं तेज वायु भूमि, आकाश नीर मुझ में,
आनन्द रूप बन के, तव मोक्ष धाम पाऊं ।।२।।

तुम नित्य शुद्ध व्यापक, अविनाशी आशा पूरक,
आशा यही है मेरी, तव मोक्ष धाम पाऊं ।।३।।

नहिं ज्ञान तुल्य कोई, वस्तु पवित्र जग में,
वेदों का ज्ञान पा के, तव मोक्ष धाम पाऊं ।।४।।

आनन्दमूल जिसका, गुण पत्र तत्व शाखा,
वेदान्त पुष्प ले के, तव मोक्ष धाम पाऊं ।।५।।

दयानन्द मोक्षफल के, तरु को न त्याग देना,
हरि पूर्ण ब्रह्म भज के, तव मोक्ष धाम पाऊं ।।६।।

हे मेरे गुरु देव सब संशय

हे मेरे गुरुदेव सब संशय मिटाया आपने,
जीव से शिव कर दिया, निर्भय बनाया आपने ।टेक।

मैंने समझा देह हूं मैं, जन्म मृत्यु है मेरी,
आत्मा का परिचय करा, भय को भगाया आपने ॥१॥

मैं समझता था कभी गोरा हूं या काला हूं मैं,
सच्चिदानन्द रूप तो मुझको बताया आपने ॥२॥

मोह ममता में फंसा, सोया था गहरी नींद में,
ज्ञान गीता का सुना, मुझको जगाया आपने ॥३॥

विषय भोगों से ही सुख की भीख थी नित मांगती,
पर भिखारी पन हटा, भिक्षु बनाया आपने ॥

मेरे सतगुरु प्यारे मीत हैं

मेरे सतगुरु प्यारे मीत हैं, मीतों से प्यारे मीत हैं ॥टेक॥

सतगुरु वचन उच्चारदे जिवें अमृत वर्षा हो रही,
जनम जनम दी विछुड़ी जो मैं रंक से राजा हो रही,
यह तो सत पुरुषों की रीत है, मीतों से प्यारे मीत हैं ॥१॥

मोह माया दे जाल विच नो मैं अपना आप गंवाया सी,
कर किरपा गुरां बांह पकड़ के ते मैनूं पार लंघाया सी,
यह तो महापुरुषों की रीत है, मीतों से प्यारे मीत हैं ॥२॥

आपे खेल खिलाड़ी सतगुरु, आपे खेडां पावंदे,
महापुरुषां दे वाक्यां द्वारा भेद सारा खुल जावंदे।
वे तो युक्ति से लाँदे प्रीत हैं, मीतों से प्यारे मीत हैं ॥३॥

सद्गुरु मेरे मैं गुरां दी, दोनों एक स्वरूप हैं,
जल थल व्यापक साचा सत्गुरु सोहं ब्रह्म स्वरूप हैं,
तुहाडा वेद भी गांदे गीत हैं, मीतों से प्यारे मीत हैं, ॥४॥

✲

आतमरस के पीने वाले

आतमरस के पीने वाले रस तो पिला दो,
ब्रह्म ज्ञान में मस्त बना दो ॥टेक॥

कौन हूं मैं कहाँ से आई, किसने यह सारी सृष्टि बनाई,
यही है मेरा भ्रम तो मिटा दो ॥१॥

भय भ्रम मेरा रहे न कोई, सुख दुख जग का व्यापे न कोई,
ऐसी तो कोई युक्ति बता दो ॥२॥

स्वपन सुषुप्ति का देखनहारा, जाग्रत का सब मेरा पसारा,
ऐसी तो समदृष्टि बना दो ॥३॥

ब्रह्म ही ब्रह्म में जाय समावे, ब्रह्म बिना कुछ नज़र न आवे,
ऐसी अखंड दृष्टि बना दो ॥४॥

✲

मुझपे इतनी ही कृपा

मुझपे इतनी ही कृपा, हे सर्वशक्तिमान कर,
अपने मिलने की बता दे, राह मेरा कल्याण कर ।टेक।

मैं मुसाफिर अन्धा हूं, मंजिल से हूं भटका हुआ,
तरस कर लाठी पकड़ ले, तू मेरा कल्याण कर ॥१॥

तेरी माया ने मुझे, ममता में है फंसा दिया,
मोह से छुटकारा मिले, मेरी मदद भगवान कर ॥२॥

तोड़ दे बन्धन मेरे, इस कैद से आज़ाद कर,
दे सहारा मुझको भगवन, बेसहारा जान कर ॥३॥

ऐसी कर किरपा हरि, होता रहे सिमरन तेरा,
याद में तेरी ही निकले, प्राण यह अहसान कर ॥४॥

मैंने जो कहना था भगवन, कह दिया दिल खोलकर,
अब रज़ा तेरा हरि जो चाहे जानी जान कर ॥५॥

गुरुदेव जी का सानी

गुरुदेव जी का सानो, कोई दूसरा न देखा,
आनन्द रूप देखा, शुद्ध शान्त रूप देखा ॥टेक॥

दिव्य ज्योति मूर्ति के, दर्शन किए हैं जिसने,
सागर-जहाँ से उस को, फिर लौटते न देखा ॥१॥

गुरु की शरण जो आये, गुण-वान हो जाये,
दर से गुरु के खाली, कोई लौटता न देखा ॥३॥

महिमा अनन्त उनकी, वर्णन करूँ मैं कैसे,
जैसो है जिसकी श्रद्धा, उस रूप में ही देखा ॥४॥

भूले हुए जो खुद को, अज्ञान तम था छाया,
दे ज्ञान आत्मा का, निश्चय कराते देखा ॥४॥

गुरु रब नूँ जानिए

गुरु रब नूं जानिए एक जी,
जिन्हां धारिया बोध विवेक जी ।।टेक।।

गुरु सच्चिदानन्द स्वरूप है, महिमा अपरम्पार अनूप है,
आए धार के रूप अनेक जी ।।१।।

गुरु सच्चिदानन्द सिद्धान्त है, दर्शन कीतियां आंदी शान्ति है,
तां ते गुरां दी पकड़िए टेक जी ।।२।।

गुरु सच्चिदानन्द लखावंदे, अहं ब्रह्म नूं आख सुनांवदे,
दिलों मेट के दुई वाला भेद जी ।।३।।

आसन बैठ एकान्त हो मारिए, हृदय गुरां दी मूर्ति धारिए,
दिलों ख्याल जमा के नेक जी ।।४।।

दास न दास उठावसी फल वो, रखे गुरां ते निश्चय अटल जो,
ओ ही व्यापे ने सब विच एक जी ।।५।।

लै जावो झोलियां भरभर के

लै जावो झोलियाँ भर भर के,
सतगुरु लाल लुटाये जांदे ने,
जिस रब नूं मैं बाहरों ढूंढदी सां,
ओ तां अन्दरों पाए जांदे ने ।।टेक।।

घट घट विच प्रीतम वसदा ए. जदों ज्योति अन्दरों जग जाए,
जदों तार नाम वाला वजदी है, सत्गुरु शब्द मिलाए जांदे ने ।१।

ऐना अखियां दे सामने जो आवे, सद्गुरु अपना रूप बना लैंदे,
दे के नाम दान अपने भक्तां नूं, धनवान बनाए जांदे ने ॥२॥

मेरे सत्गुरु भोले भाले ने, पर खोलदे दिलां वाले ताले ने,
जिन्हां डोरा सुटियाँ सत्गुरां ते, ओ तां मौज मनाए जांदे ने ।३।

※

सत्गुरु ज्ञान की गंगा

सत्गुरु ज्ञान की गंगा बहाने वाले आए हैं,
शिवोऽहं मन्त्र का नारा लगाने वाले आए हैं ॥टेक॥

पुरुष प्रकृति जगत अरु जीव में संशय विपर्य्य था,
आज उसी द्वैत दुविधा को मिटाने वाले आए हैं ॥१॥

देह अभिमान में फ़ंसकर, भरमते जीव थे सारे,
उसी भ्रम भेद भ्रांति को मिटाने वाले आए है ॥२॥

अविद्या रात्रि में सोया पड़ा था जीव अज्ञानी,
मगर अब ज्ञान का दीपक जगाने वाले आए हैं ॥३॥

जन्म मरने का भय इस जीव को निशदिन खटकता था,
आज यमराज के भय से छुड़ाने वाले आए हैं ॥४॥

गुरु दर्शन से प्रेमाजन मिटा अब जीवपन सारा,
अहं ब्रह्मास्मि का डंका बजाने वाले आए हैं ॥५॥

※

मेरा जीवन सी अनमोल

मेरा जीवन सी अनमोल, दिता मैं आप मिट्टी विच रोल,
दसो मैं की करां, समझाओ सत्गुरु की करां ।।टेक।।

कंचन काया मिली सी मैंनूं, वचपन खेल गंवाई,
अगापिछा मैं कुछ न सोचया, जदो जवानी आई ।।१।।

धौले पीले धन ने मेरा ऐसा मन भरमाया,
रब नाल वी दगा करदियां, मैंनूं खौफ न आया ।।२।।

जिन्हां लई मैं दुनियां दे विच, कीती हेरा फेरी,
उन्हां टबरां ने चिन्ता दी इक चिता बना लई मेरी ।।३।।

न खावां न दान करां मैं, माया जोड़ी जावां,
खाने वाले खाई जांदे, कर कर लंबियां बांहवा ।।४।।

चमन मेरे इस चंचल मन नूं, किते चैन नहीं आंदा,
कथा कीर्तन भजन प्रभु दा, मेरे मन नहीं भांदा ।।५।।

✻

गुरां द्वारे आवां जावां

गुरां द्वारे आवां जावां, रज रज दर्शन पावां,
अज दिन आ गया ।।टेक।।

ओ मेरे दाता जी, मलया तेरा दरबार है,
तज के मैं आई अज, झूठा सारा संसार है,
दिल विच तेरी जोत जगावां, रज रज दर्शन पावां,
अज दिन आ गया ।।१।।

ओ मेरे दाता जी, सजया तेरा दरबार है,
भाग चंगेरे मेरे, पाया तेरा दीदार है,
फुल्लां वांगू खिड़ खिड़ जावां, रता नहीं मुरझावां,
अज दिन आ गया ।।२।।
ओ मेरे दाता जी, हाथों में तेरे पतवार है,
तूं ही मेरी नदिया, तूं ही खेवनहार है,
तूं ही मेरा तारनहारा, सब जग का रखवारा,
अज दिन आ गया ।।३।।

ओ मेरे दाता जी, भरया तेरा भण्डार है,
चरणों की भक्ति दे दो, दासी खड़ी दरबार है,
चरणकमल ते शीश निवावां, भुल अपनी बखशावां,
अज दिन आ गया ।।४।।

*

संत जगत में आते हैं

सन्त जगत में आते है, जग तारन के लिए,
आधि, व्याधि, उपाधि, अविद्या टारन के लिए ।।टेक।।

सूरत में इक मूरत बन कर सन्त जगत में आते है,
सेवा कर श्रद्धा से पूरी, चार पदार्थ पाते हैं,
धर्म रूप धरती पर आये, तारन के लिए ।।१।।
सन्त की महिमा वेद न जाने, गुरु ग्रन्थ बतलाते हैं,
नारद भी वीणा को लेकर, गीत उसी के गाते हैं,
रावण रूपी मन की ममता, मारन के लिए ।।२।।
प्रेम किया प्रहलाद भक्त ने, भव सागर से पार हुआ,
नरसिंह रूप धरे नारायण, सतगुरु ने अवतार लिया,
राम-गुरु में भेद न जानो, तारन के लिए ।।३।।

*

चलो नी रंगाइए रंग

चलो नी रंगाइए रंग, आया है ललारिया ।।टेक।।

किथे ओ ललारी रहंदा, की ओ रंगाई लैंदा,
दस्सो मैंनूं सारियां ।।१।।

सच्च खण्ड नगरी विच रहदां, श्रद्धा दे ओ पैसे लैंदा,
नाम दा व्यपारिया ।।२।।

इक सखी मुखों कहंदी, पैसे ते ओ लैदा नहियों,
सीस लै उतारिया ।।३।।

सीस साथों दिता न जांदा, भुल्ला मन पया भटकादां,
पइयां ऐ लाचारियां ।।४।।

जिन्हां नहियो सीस दित्ते, ओनां ने मंदे हाल कित्ते,
होइयां ने खवारियां ।।५।।

जिन्हां सखियां सीस दित्ते, चोलड़े रंगाय लित्ते,
चढ़ गई अटारियां ।।६।।

✲

खोल दो लगे जंगाली

खोल दो लगे जंगालो जन्दरे, प्रभुजी मेरे खोल दो,
जोड़ लो चित चरणां दे नाल,
प्रभुजी मेरा जोड़ दो ।।टेक।।

ऐसी भगवन लावा चाबी, चढ़ जाए मैंनूं रंग उनावी,
मोड़ दो मेरे मन दिया वागां, प्रभु जी मेरे मोड़ दो ।।१।।

भुल्लां मन मेरा समझ न पाए, बार बार विषयां वल जावे,
मोड़ दो मेरे मन दियां वागां, प्रभु जी मेरे मोड़ दो ॥२॥

ऐसी भगवन लावो युक्ति, दुनियाँ मैनूं लगे झूठी,
मोड़ दो मन विषयां तो मेरा प्रभूजी मोड़ दो ॥३॥

मैं तो उन सन्तन का दास

मैं तो उन सन्तन का दास, जिन्होंने मन मार लिया,
मन मार लिया मन मार लिया ॥टेक॥

मन मारा, तन वश किया, सभी भरम गये दूर,
बाहर से कछु सूझत नाहि, अन्दर बरसे नूर ॥१॥

आपा मार जगत में बैठे, नहीं किसी से काम,
उन में तो कछु अन्तर नाहीं, सन्त कहो चाहे राम ॥२॥

प्याला पी लिया नाम का, छोड़ जगत का मोह,
हम को सतगुरु ऐसे मिल गये, सहज़ मुक्ति गई होय ॥३॥

नरसिंह जी के सतगुरु स्वामी, दिया अमी रस प्याय,
एक बूंद सागर में मिल गई, क्या करेगा यमराय ॥४॥

धन्य धन्य गुरु महाराज

धन्य धन्य गुरु महाराज, मैं आई शरण तिहारी ।टेक।

इतनो विनती सुन लीजिए, मोहे ज्ञान भक्ति वर दीजिए,
सब मन के भरम मिटीजे, मैं आई शरण तिहारी ॥१॥

सब को सम दृष्टि निहारूं, कहीं राग न मन में धारूं,
ऐसा मन को समझाऊं, मैं आई शरण तिहारी ॥२॥

मेरी बुद्धि को शुद्ध करीजे, मन शीशा निर्मल कीजे,
आतम स्थिति करीजे, मैं आई शरण तिहारी ॥३॥

मुझ में मन बुद्धि नहीं है, बस आस एक मन यही है,
मोहे चरन शरण रख लीजे, मैं आई शरण तिहारी ॥४॥

केही चढ़ गई अजब खुमारी

केही चढ़ गई अजब खुमारी,
गुरां नशा पिलाया ब्रह्म ज्ञान दा ॥टेक॥

गूढ़े नयन हुए मतवाले, रंग गये लाल रंग दे नाले ।
रंग नही अब उतरन वाले, सोई लायक अद्वैत दिखान दा,
गई होश दुई दी मारी ॥१॥

जिधर देखां इको दिसदा, यह जग सारा रूप है जिस दा,
सूरज चान्द में तेज है जिसदा, किधरे घर किधरे घर वाली,
होर कौन है उस दे नाल दा, आपे घर आपे घर वाली ॥२॥

जिस दे नाल दा होर न कोई, इको ही रब है सारे सोई,
आपे बनया है रूप जहान दा किधरे नर है किधरे नारी ॥३॥

चतुर दास न रही चतुराई, इस नशे ने कीता सौदाई,
न कुछ खोई ते न कुछ पाई, डेरा कूच होया अभिमान दा,
सुख पाया अपरम्पारी ॥४॥

गुरु ब्रह्मज्ञान वाले तीर

गुर ब्रह्मज्ञान वाले तीर छोड़दे नी बहिनों
सच्ची मुच्ची,
जिनां लगदे उन्हां दे नहियों मन डोलदे,
नी बहिनों सच्ची मुच्ची ।।टेक।।

यह खेल तमाशा दुनियां-हां जी दुनियां,
इस दा भेद न पाया ऋषियां मुनियां-हां जी मुनियाँ,
ज्ञानी इसदी गहराई विचों मोती टोलदे,
नी बहिनों सच्ची-मुच्ची ।।१।।

गुरु ब्रह्मज्ञान-सिखांवदे, हां सिखांवदे ।
विच गृहस्थ दे मस्त बनांवदे, हां बनाँवदे ।
चिद्जड़ वाली ग्रन्थि नूं खूब खोलदे
नी बहिनों सच्ची मुच्ची ।।२।।

ब्रह्मविद्या दा गहना पालो, हाँ पा लो,
रागद्वेष नूं मनों मुकालो, हां मुकालो,
फेर बोलो जिवें बनां विच शेर बोलदे,
नी बहिनों सच्ची मुच्ची ।।३।।

*

पूरे फक्करां दी चाल

पूरे फक्करां दी चाल मस्तानी होंदी ए,
विच रब दे उन्हां दी जिन्दगानी होन्दी ए ।।टेक।।

अपनी मस्ती दे विच कदे कदे बोलदे,
तीर वांग घायल करने वाली बाणी होन्दी ए ।।१।।

निगाह नाल बेड़ा पल विच पार कर दे,
बस फक्कड़ां दी एहो ही निशानी होन्दी ए ।।२।।

शीश गुरु चरणां उत्ते भेंट कर दे,
बस फक्कड़ां दी ऐहो कुरबानी होन्दी ए ।।३।।

सारे जग दिया खुशियां

सारे जग दियां खुशियां इक पासे,
मेरे गुरां दा सहारा इक पासे ।।टेक।।

मैं सत्गुरु दी, सत्गुरु मेरा है,
मैनू गुरां बिनां घोर अन्धेरा है,
सारे चान्द ते सूरज इक पासे,
मेरे गुरां दा सहारा इक पासे ।।१।।

सत्गुरु तेरे ही गुण गाती हूं, दाता तेरा ही नाम ध्याती हूं,
लखां भक्त प्यारे इक पासे मेरे गुरां दा सहारा इक पासे ।।२।।

मैं तां दर तेरे ते आवांगी, दाता दुःखड़े खोल सुनावांगी,
लखां दारु दवाइयाँ इक पासे, मेरे गुरां दा सहारा इक पासे ।३।

मेरे मन गुरु पग में

मेरे मन गुरु पग में रहना ही होगा,
यह भ्रम भेद अब ही हटाना हो होगा ।।टेक।।

यह तेरा यह मेरा सभी कुछ भुला कर,
यह दिलवर का दीदार पाना ही होगा ।।१।।

करो नित चितवन चेतन का अब तुम,
तो निज रूप में अब समाना ही होगा ।।२।।

भुलाया है सुख-रूप क्यों तूने मनुवां,
यह अज्ञान परदा हटाना ही होगा ।।३।।

जब प्रकाश आतम का अनुभव में होगा,
यह मिथ्या देह दृष्टि हटाना ही होगा ।।४।।

रंगा हुआ मन रूप देखें सभी में,
निजानन्द में अब समाना ही होगा ।।५।।

✲

रहमतां करदा जी

रहमतां करदा जी, झोलियाँ भरदा जी,
पीरां दा पीर मेरा शाही फकीर,
मेरा सत्गुरु प्यारा जी ।।टेक।।

आन पड़े जो शरणी, कर देंदा मालोमाल,
तुसी लुट लो संगतो लुट लो, मेरा सत्गुरु दीनदयाल,
भरे भण्डारे नी, जी कहंदे सारे नी, जी मेरा पीरां दा पीर ।।१।।

रब सत्गुरु है मेरा, यह तो समझो सब कोई,
ओ कट देन्दा चौरासी वाला फेरा, देर न लान्दा जी,
देर न लान्दा जी, कि निश्चय करादाँ ए जो,
मेरा पीरां दा पीर ।।२।।

मेरे सतगुरु जी दा द्वारा, सारी दुनियां तो न्यारा,
प्रेम दी बर्षा करदा ए जी, सबनूं मस्त बनांदा ए जी,
मेरा पीरां दा पीर ।।३।।

✲

लगन तुझसे लगा बैठे

लगन तुझ से लगा बैठे, जो होगा देखा जायेगा,
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जायेगा ।टेक।

कभी दुनियां से डरते थे, जो छुप छुप याद करते थे,
मगर अब परदा उठा बैठे, जो होगा देखा जायेगा ।।१।।

कभी यह ख्याल था, दुनियां हमें बदनाम कर देगी,
शरम अब बेच खा बैठे, जो होगा देखा जायेगा ।।२।।

दीवाने बन गये तेरे तो फिर दुनियां से क्या मतलब,
जो सब से दिल हटा बैठे, जो होगा देखा जायेगा ।।३।।

मैं हूं सर्वस्व दे सकता, तुम्हारे इक इशारे पर,
है दिल पुखता बना बैठे, ज़ो होगा देखा जायेगा ।।४।।

तुम्हारी बेरुखी से दिल, यह मेरा टूट जायेगा,
चमन जीवन लुटा बैठे, जो होगा देखा जायेगा ।।५।।

मस्तों की आंख की मस्ती ने

मस्तों की आंख की मस्ती ने, लाखों को मस्त बना डाला,
जो सबक कोई भी पढ़ न सका, मस्तों ने उसे पढ़ा डाला।टेक।

मस्तों की आंख की मस्ती का, यह राज़ समझना मुश्किल है,
पर जिसने हिम्मत कर ली है, वह पर्दा दूर हटा डाला ।।१।।

जब प्रेम पुजारी आता है, तो प्रेम उसी को देते हैं,
जब प्रेम दिया सब कुछ ही दिया, सब दिल का राज बता डाला ।२।

यह दिल ही दिल का सौदा है जो देता है वह लेता हैं
जिस राह को दुनियां दूर कहे, वह एक नज़र में बता डाला ।।३।।

तू प्रेमी प्रेम से जरा आ जा, तूं आ जा उनकी शरणी में,
वह ज़ीव बड़ा खुशकिस्मत है, जिस दुई का दाग मिटा डाला ।४।

*

कित्थों नी रंगाइयां

कित्थों नी रंगाइयाँ अखां, पुछदियां सारियां
छोटियां ते बढ़ियाँ सत्संगना प्यारियां,
गुरां तो रंगाइयाँ अखां, सुन लवो सारियां,
ताइयों तेरे नाम दियां चढ़ियां खुमारियां ।।टेक।।

सत्गुरु मेरयां ने मेलया संयोग जी,
मिट गए दुःख सारे हो गई नीरोग जो,
जनम मरण दीयां कटियां ने बारियां ।।१।।

सत्गुरु मेरयां ने कितां ए कमाल जी,
शहनशाह बनाया, मैं तां युगां तो कंगाल सी,
कित्थों लभाँ लाल मैनूं पुछदियां सारियाँ ।।२।।

सत्गुरु मेरियाँ ने चरणां नाल ला लिया,
वगदी अंधेरी विच दीवा ए बालिया,
ओथों लभाँ लाल, मैनूं सुन लवो सारियां ।।३।।

सत्गुरु मेरियां ने दरस दिखाया है,
मोह वाला फंदा मेरा फाड़ गिराया है,
आवागमन दीयां कटियां ने बारियाँ ।।४।।

चल पया हुन साडा ओम् वाला जाप जी,
श्वास श्वास विच ग्रावे ग्रोम् दी आवाज जी,
आनन्द सरोवर विच ला लइयां तारियां ।।५।।

सत्गुरु द्वारे ते

सत्गुरु द्वारे ते गजब हो गया,
ग्रहम् ब्रह्म ज्ञान के जगत खो गया ।।टेक।।

सत्गूरु द्वारे ते बहे ज्ञान-गंगा,
निर्मल होवे जिसदा मन होवे चंगा,
डुबकी लगा के सारा मल धो गया ।।१।।

सत्गुरु द्वारे ते ये फैसला हुआ,
सब कुछ भ्रम है जगत खो गया,
जानता हूं सब कुछ जहान जो गया ।।२।।

सत्गुर द्वारे ते बिछी शान्त शैय्या,
मिलता आराम जहां कोई नहीं जगइया,
ब्रह्मानंद पाके थका मन सो गया ।।३।।

सत्गुरु द्वारे ते सच्चा सुख मिलदा,
श्रद्धा दे नाल जेड़ा चरणां ते डिगदा,
मेरी रग-रग विच वास हो गया ।।४।।

मैनूँ देयो वधाइयां नी

मैनू ं देयो वधाइयां नी सहेलियो धन्य धन्य सतगुरु मेरे,
धन्य क्यों न आखां नी सहेलियो
जिन्हां चढ़ाया बेड़े ॥टेक॥

मेरे पन्जे दुश्मन नी सहेलियो, वसदे पये घर मेरे,
छेवीं तृष्णा साड़ी नी सहेलियों, आन वड़ी घर मेरे,
गुरु ज्ञान दा दीवा नी सहेलियो रखया हृदय मेरे,
विच नाम दी बत्ती नी सहेलियो पाई अमृत वेले,
हुन होया उजियाला नी सहेलियो मिटे अज्ञान अन्धेरे,
पन्जे दुश्मन मर गये नी सहेलियो तृष्णा नु ं जान दे घेरे ॥१॥

सतगुरु मेरे पर उपकारी, मेरे मन नू ं खूब नवांदे,
बादल बन के सतगुरु जी, संगता ते वरसांदे,
सुरत शब्द दा मेल करा के मैनू ं ब्याह-दे योग बनांदे,
मेरी मंगनी हो गई नी सहेलियो विष्णुपुरी दे नेड़े ॥२॥

सतगुरु दे वचनां नू ं सुन के मेरा दिल ऐवें खिलिया,
जिवे खिलियां चम्बे दीयां कलियां,
अज खुशियां होइयाँ नी सहेलियो, पाओ फुलां गल सेहरे ॥३॥

भक्ति रूपी मेंहदी लगा के, गुरुज्ञान दा गाना बन्धाया,
दस इन्द्रिय सन्तोष दिला के, विचार दा चूड़ा चढ़ाया,
गुरु पंडित बन गये नी सहेलियो देन्दे नाम दे फेरे ॥४॥

विवेक वैराग्य दा तेल ठका के, गुरां ज्ञान दा सूट पुआया,
अन्तःकरण हवेली दे विच, मेरी सुरति ने डेरा लाया,
मेरी बुद्धि सम्भालो नी सहेलियो विछुड़े साजन मेले ॥५॥

पिछली कमाई दी जन्ज बनी है ते मेरा लाड़ा कृष्ण मुरारी,
सज धज के जन्ज बूऐ ते आई नी मैं बारी फुलां दी खारी,
हुन अनहद वाजे नी सहेलियो वजदे पये घर मेरे ।।६।।

सुरती रूपी वेदी गड़ा के गुरु लावां ज्ञान दिवाइयाँ
आत्मां दा मैं दर्शन पाया संगता देन वधाइयां,
साडी जोड़ी मिल गई नी सहेलियो लाली आ गई चेहरे ।।७।।

दसवें द्वारे सेजां बिछियां, नी मैं जा के सेजां चाढ़ियां,
पूज्य पति नूं मिल के ते, मैं सईयां दे विच रलियां,
मैंनू खुशियां होइयां नी सहेलियों पार होए मेरे वेड़े,
हुन गदगद होइयां नी सहेलियो, शाम आया घर मेरे ।।५।।

सत्गुरु दासी अरजां कर दी, हथ जोड़ के शीश निवांदी,
जे कोई भुल चुक मेत्थो होई, सतगुरु तो बख्शांदी,
सुख सतगुरु शरणी नी सहेलियो, मिट गये झगड़े झेरे ।।६।।

मैंने खोया हुआ धन

मैने खोया हुआ धन पा लिया, तेरे दरबार आन के ।
मैं शाम नूं अपना बना लिया, तेरे दरबार आन के।टेक।

सर्व सुखां दी लोड़ न कोई, मिलया शहनशाह थोड़ न कोई,
मैं तां नाम रत्न धन पा लिया, तेरे दरबार आन के ।।१।।

बिगड़ी बनाने वाले, तूं ही मेरा दाता है,
कख तो बनावे लख, जिसे तूं चाहता है,
मैं तो शाम नूं अपना बना लिया, तेरे दरबार आन के ।।२।।

काम, क्रोध और लोभ ते माया, विषयां ने आ के जाल बिछाया,
मैं तां विषयां तो फन्द छुड़ा लिया, तेरे दरबार आन के ।।३।।

जीव ते सत्गुरु कर्म कमाया, सत्य असत्य का भेद बताया,
मैं तां नाम रतन धन पा लिया, तेरे दरबार आन के ।।४।।

विनती करूँ गुरु चरणन में

विनती करूं प्यारे गुरुचरणन में, मेरा बेड़ा पार हो जाए,
अवगुन हारी मलिन बुद्धि दा, गुरु किरपा से सुधार हो जाए।टेक।

सत्गुरु मेरे पार उतारो, अपनी कृपा से मुझको तारो,
पतितपावन है नाम तिहारो, तेरे बिना दूजा नजर न आए ।।१।।

ढूंढ़ ढूंढ़ थकियां जग सारा, कोई न मिलया जो देवे सहारा,
वेखया मतलब दा संसारा, बिन स्वारथ कोई नेड़े न आवे ।।२।।

पर उपकार वचन मन काया, सत्गुरु सहज स्वभाव बताया,
डुबदे जीवां नूं किनारे लाया, सच्चा नाम जहाज बनाए ।।३।।

वेखया झूठा खेल मदारी, तन मन दी सब होश विसारी,
विषयां विच गई सुध बुध मारी. जनम गंवाया नाम भुलाएं ।।४।।

सारा जग छोड़ आई तेरे द्वारे, शरणागत प्रभु पालनहारे,
अवगुण हारी दे अवगुन दाता, बख्शो बख्शनहार सदाए ।।५।।

सद्गुरु प्रार्थना

पूजा सतगरु देव की, करुं भावना साथ ।
श्रद्धा भक्ति धूप दीप, लेकर अपने हाथ ।।१।।

उमड़े हृदय भाव से, पूजूं मैं गुरुदेव ।
चन्दन केसर तिलक से, चरण कमल को सेव ।।२।।

श्रद्धा प्रेम के पुष्पों से, गूंथू सुन्दर हार ।
चढ़ाऊँ सतगुरु भेंट मैं, बोलूं जय जयकार ।।३।।

आंसू झरे प्रेम के, नयनों से लगातार ।
अर्घ्य दे गुरु चरणों को, पावूं सुख अपार ।।४।।

भक्ति भाव के आंसुओं से, गुरु चरणों को धोए ।
पूजा के रस प्रेम में, मन तन लूं भिगोए ।।५।।

आंसू रोके न रुके, पा सतगुरु मिलाप ।
संकेत करे गुरु देव को, देवें नाम का जाप ।।६।।

मौन भाव से कह रहे, आंसू भरे दोय नैन ।
लोक परलोक में न मिले, गुरु सुमिरन बिन चैन ।।७।।

परिक्रमा लूं भाव से, चरण कमल को पूज ।
सतगुरु की कृपा से मुझे, हो निजरूप की सूझ ।।८।।

चरण कमल गुरु देव के हृदय भीतर धार ।
परम प्रेम से पूज कर, पा जावूं भव पार ।।९।।

तन, मन, धन, अर्पण करुं, गुरु चरणन पे आज ।
शुभ महोत्सव में सदा, पूजूं तुझे महाराज ।।१०।।

चरण सरोज निज पूज कर, मागूं नाम का दान ।
करो कृपा मुझ पर प्रभु, होय आतम कल्याण ।।११।।

उत्तम पूजा भाव यह, गुरु आज्ञा लूं पाल ।
आशीष के प्रसाद से, जीत लेवूं यमकाल ।।१२।।

आज्ञानुसार जीवन बने, पूजा का फल यह ।
प्रभु तेरे इस उपदेश से, सफल होए नरदेह ।।१३।।

मेरा मुझ में है क्या, हे मम तारनहार।
तेरा तुझ को सौंप कर, पावूं सुख अपार ।।१४।।
जय बोलूं गुरु देव की, बार-बार जयकार।
तुम्हारा यश गाती फिरुँ, भूलं न उपकार ।।१५।।

जुगों जुग लहराएगा

गगन से देवता सब पुष्प बरसाकर पुकारे हैं।
अमर सतगुरु की महिमा है, अमर सतगुरु हमारे हैं।
जुगो जुग सतगुरु के नाम का झण्डा लहरायेगा।
दिनों दिन अधिक यश संसार में सतगुरु का छायेगा ।।टेक।।

हजारों लाखों अधिकारी यहां आते है आएगें,
गुरु से फ़ैज रुहानी सदा पाते है पाएगें,
जिसे विश्वास है चरणों में, फल भक्ति का पायेगा ।।१।।

यह परमार्थ का तकिया है यह है दरबार रुहानी,
फकीरी यहाँ की दासी है यह तख्ते सुलेमानी,
वह बड़भागी है जो सतगुरु से सच्चा नेह लगायेगा ।।२।।

उन चरणों में भक्ति प्रेम की गंगा सदा बहती,
जरा सी मैल उसके चित्त में माया की नहीं रहती,
जो इस तीर्थ में श्रद्धा पूर्वक आकर नहायेगा ।।३।।

हमें सतगुरु के उपदेशों ने बस इतना सिखाया है,
जो त्यागे बुद्धि चतुराई सभी कुछ उसने पाया है,
जो दासनदास गुरु चरणों में आपे को मिटायेगा ।।४।।

जो बनाया बन गए

प्रेमियों ने जो बनाया बन गए,
प्रेम के बन्धन में मोहन बंध गए ।।टेक।।

भाव जो देखा था तुलसी दास का,
छोड़ कर मुरली धनुष धारी बन गए ।।१।।

द्रोपदी ने भी पुकारा प्रेम से,
साड़ियों का रूप मोहन बन गए ।।२।।

मीरा ने भी प्रेम किया था शाम से,
नाग से नारायण मोहन बन गए ।।३।।

तू भी बन्दे प्रेम कर भगवान् से,
प्रेम करेगा जो वो उसके बन गए ।
प्रेम के बन्धन में मोहन बंध गए ।।४।।

मिटी है चिन्ता

जगत में उनकी मिटी है चिन्ता,जो तेरे चरणों में ग्रा झुके हैं
वही हमेशा हरे भरे हैं जो तेरे चरणों में ग्रा झुके है ।टेक।

गए हैं राजा वजीर बनकर, न पाया तुझको फकीर बनकर,
वही परमपद को पा गए हैं, जो तेरे चरणो में आ झुके हैं ।।१।।

न पाया तुझको किसी ने बल से न पाया तुझको किसी ने छल से,
उन्हीं को तेरे हुए हैं दर्शन, जो तेरे चरणों में आ झुके हैं ।।२।।

किसी ने उनकी करी बुराई, किसी ने उनकी करी भलाई,
सुधार मार्ग दिखा गए हैं, जो तेरे चरणों में ग्रा झुके हैं ।।३।।

राम नाम है सच्चा मार्ग, ऋषी मुनी सभी गा गए है,
वही जन मुक्ति को पा गए हैं, जो तेरे चरणों में आ झुके हैं ।।४।।

अपार माया प्रभु तुम्हारी, मलीन मन मैं मूढ़ अनाड़ी,
नैया पार लगा हमारी, हम तेरे चरणों में आ झुके हैं ।

✲

नाम हरि का हृदय से

नाम हरि का हृदय से न भूलो,
यह भुलाने के काबिल नहीं है,
बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है,
यह गंवाने के काबिल नहीं है ।।टेक।।

चोला अनमोल तेरा सिला है जिसमें जीवन का फूल खिला है,
श्वास गिन गिन के तुझको मिला है,
यह लुटाने के काबिल नहीं ।।१।।

बात बिल्कुल यह मानों सही है, जिनकी देहात्मक बुद्धि रही है,
आतम बोध जिसमें नहीं है, मुक्ति पाने के काबिल नहीं है ।।२।।
जिसने हीरा जन्म ऐसा पाकर, खोज अपनी न की मन लगाकर,
वह तो भगवान के पास जाकर,
मुंह दिखाने के काबिल नहीं है ।।३।।

उसने नरतन भी पाकर क्या कीता,
जो पढ़ी न सुनी भगवत् गीता,
सेवा सन्तों की जिसने न कीती,
दास कहाने के काबिल नहीं है ।।४।।

✲

सोहणे लगदे ने

सोहणे लगदे ने महल चुबारे, जित्थे सत्संग लगदा,
श्रोत्थे आवन सन्त प्यारे, जित्थे सत्संग लगदा ।टेक।

जिस घर दे विच सत्संग लगदा, पाप दरिद्र ओत्थों भजदा ।
पाप वो करन किनारे, जित्थे सत्संग लगदा ।।१।।

कण कण उस दा होवे पवित्र, जो आवे बन जावे मित्र,
सब लैंदे प्रेम हुलारे, जित्थे सत्संग लगदा ।।२।।

सत्संग दे विच अमृत बरसे, प्रभु मिलन नूं आतमा तरसे,
शुद्ध हृदय ओ३म् उचारे, जित्थे सत्संग लगदा ।।३।।

जीवन का आधार है सत्संग, मानवता का सार है सत्संग,
डूब रहे को तारे जित्थे सत्संग लगदा ।।४।।

जो भी बनें सत्संग दा प्यारा सब दुःख भ्रम मिट जावे सारा,
वह पहुंचे ब्रह्म द्वारे—जित्थे सत्संग लगदा ।।५।।

रंगना प्रेम दियां

चढ़दियां भागां नाल रंगना प्रेम दियां,
चढ़दियां कर्मा नाल रंगना प्रेम दियां ।।टेक।।

भागां वाले सत्संग कर दे. किसे भी मुशकिल तो नही डरदे,
जिन्हां दे शुभ ख्याल ।।१।।

जिसते मोहन दया दिखावे, उस नूं अपनी लगन लगावे,
नट नागर नन्द लाल ।।२।।

प्रेम दा रंग जदों चढ़ जांदा, अपना आप तदो भुल जांदा,
कट जांदे जंजाल ।।३।।

मिट्ठे शब्द सदा वह बोले, सत्य धर्म तो कदे ना डोले,
शाम उसदा रखवाल ।।४।।

प्रेमी शाम सुन्दर दा दिवाना, नचदा पागल हो मस्ताना ।
प्रेम दे रंग विच लाल ।।५।।

*

वेला अमृत गया

वेला अमृत गया, आलसी सो रहा, बन अभागा,
साथी सारे जगे तूं न जागा ।।टेक।।

झोलियां भर रहे भागां वाले लाखों पतितों ने जीवन सम्भाले,
रंक राजा बने, ज्ञान रस में सने, कष्ट भागा ।।१।।

कर्म उत्तम थे जो नर तन पाया, आलसी बन के हीरा गवांया,
हो गई उलटी मति, कर के अपनी क्षति, विष में पागा ।।२।।

धर्म वेदों का देखा न भाला, वेला अमृत गया न सम्भाला,
सौदा घाटे का कर, हाथ माथें पै धर, रोने लागा ।।३।।

देश अब तक न तूंने विचारा,
सिर से ऋषियों का ऋण न उतारा,
हंस का रूप था, गंदला पानी पिया, बन के कागा ।।४।।

सीख गुरु की अभी मान ले तूं निज को विज्ञान से जान ले तूं,
शब्द सोऽहम् का भज, देह अभिमान तज, हो विरागा ।।५।।

*

उठ के सवेरे

उठ के सवेरे जेड़े हरि गुण गानगे,
मंगियां मुरादां भगवान कोलों पानगे ।।टेक।।

प्रभु दे द्वारे उत्ते डेरा जिन्हां ला लया,
जीवन भी अपना सफल बना लया,
गीत ओस आदमी दे, देवता भी गानगे ।।१।।

सौंप दित्ती जिंदड़ी जिन्हें कृष्ण कन्हैया नूं,
अपना बना लया जिन्हें बन्सी बजैया नूं,
राधा वांगन शाम नाल रास ओ रचानगे ।।२।।

कथा विच आन वाले, कदे वी न रुकदे,
प्रेम दे जो बूटे लगे कदे वी न सुकदे,
चक्कर चौरासी वाले आपे कट जानगे ।।३।।

प्रेमियां दा कम सदा दुःखड़े सहारना,
सुपने दे विच वी न प्रभु नूं विसारना,
मीरां बाई वांगन तेरी लाज ओ बचानगे ।।४।।

*

अमृत दा सागर भरया

अमृत दा सागर भरया, पीलौ जिस पीना होवे,
सतसंग विच शामिल होके, जी लौ जिस जीना होवे ।टेक।

सतसंग है अजब निराला, आवे कोई करमां वाला,
गुरु अमृत रस पीके, जो लौ जिस जीना होवे ।।१।।

सतसंग है बड़ा अनोखा, पाना न उसदा औखा,
दुखिया शरीर नूं जिस सुखिया बनाना होवे ।।२।।

प्रभु दे दर जो आवे, खाली कोई न जावे,
इस सुख नूं सोई पावे, मर के जिस जीना होवे ।।३।।

वेदों के मीठे वाक्य हैं

वेदों के मीठे वाक्य हैं, सुन लो प्यार से,
दुई का नाश होता है, आतम विचार से ।।टेक।।

मंजिल तेरी दूर है, जाना जरूर है,
तन मन में शक्ति भर दे, अपने विचार से ।।१।।

ब्रह्म विचार कीजिए, फिर जगत है कहां,
जगत दिखाई देता है, भ्रम के आधार से ।।२।।

कर लीजिए प्रतिज्ञा, वेदों के सामने,
कभी झूठ नहीं बोलेंगे, अपनी जवान से ।।३।।

गुरु के चरणों में बैठ कर अपने को जान ले,
यह मिथ्या सब प्रपंच है, सत् ब्रह्म पहिचान ले,
अहम् ब्रह्म निश्चय कर लें, महा बाक्य प्रमाण से ।।४।।

रब नहिं वसदा दूर

रब नहिं वसदा दूर अखियाँ खोल जरा,
नहिं नेड़े नहिं दूर सोऽहम् बोल जरा ।।टेक।।

फूल बास मुख दर्पण मांही, व्याप रहा सब घट-घट मांही,
मैं-मेरी कर दूर अंखियाँ खोल जरा ।।१।।

ज्यों पत्थर में प्राण समाये, बिन पुरुषार्थ नजर न आये,
हर वेले भरपूर, अखियां खोल जरा ।।२।।

मैं नूं मार मुकावे जेहड़ा, साफ करे इस दिल दा वेहड़ा,
कडदे दिलो गरूर अखियां खोल जरा ।।३।।

बिन सतसंग मिले नहीं मारग, सतगुरु कहंदे कोल है शौहर,
सतसंग करो जरुर, अखियाँ खोल जरा ।।४।।

बिन सतसंग न सोझी पावे, बिन सतगुरु रब हथ नहीं आवे,
खास यह गल मशहूर, अखियां खोल जरा ।।५।।

सच्चा सतगुरु जे मिल जावे, निज घर दे विच घर दिखलावे,
परगट होवे नूर सोऽहम् बोल जरा ।।६।।

✲

ऐना थोथियां गल्लां

ऐना थोथियां थोथियां गल्लां नाल
प्रीतम नूं रिझाया नहिं जान्दा ।
सिर धड़ दी बाजो लाये बिना
ऐ आनन्द पाया नहिं जान्दा ॥

जे खवाहिश है शौह मिलने दी,
कर दे न्योछावर जिन्दड़ी नूं-२ बिना अपना आप मिटाये दे,
ऐ आनन्द पाया नहीं जान्दा ॥१॥

सत्गुरु दे चरणां विच बह के दासी ने इको गल सिखी है,
जे आप किसे दे बनिये ना कोई अपना बनाया नहीं जान्दा ॥२॥

कन खोल के सुन लो ऐ सजनो ऐवें ओ प्रीतम मिलदा नहीं,
जद तक मुर्शिद दे कदमां विच, इस दिल नूं लुटाया नहीं जान्दा।३।

इस दिल दी दुनियां दे अन्दर अकसर ही ऐसा होन्दा है,
दिल विच तां कुछ-२ होन्दा है पर मुंह ते लियाया नहिं जान्दा।४।

जद दी दिल इक नाल ला बैठी, दूजा नजरां विच आंदा नहीं-२
जिस दिल विच तेरा ही कब्जा है कोई होर बिठाया नहीं जान्दा।५।

पूरे मुरशिद दी रहमत बिना मंजिल या किनारा नहीं मिलदा,
जद तक दुई दा परदा है इस भेद नूं पाया नहिं जान्दा ॥६॥

*

असी अन्दर करिए साफ

असी अन्दर करिए साफ, प्रभु जी साडे अन्दर आवनगे।टेक।

इस अन्तः करण दे अन्दर, प्रभु जी दा सुन्दर मन्दिर,
जब अन्दर होगा साफ, प्रभु जी फिर आसन लावनगे ॥१॥

साधना दी बुहारी फड़ के, नित झाड़िए उठ के तड़के,
होवे कूड़ा कर्कट साफ, प्रभु जी फिर झलक दिखावनगे ।।२।।

श्रद्धा दे फूल लया के, मन मन्दिर खूब सजा के,
करे प्रेम नाल फिर याद, प्रभु जी फिर दर्श दिखावनगे ।।३।।

आओ प्रेम दी ज्योत जगाइए, सुरती नाल सुरत टिकाइए,
फिर उदय होनगे भाग' परमपिता पास बिठावनगे ।।४।।

प्रेमी तैनूं अर्ज सुनावे, जदों हृदय साफ हो जावे,
सब दूर होण संताप, परमपिता नज़री आवनगे ।।५।।

प्रेम की गंगा

जरा प्रेम की गंगा में नहाया करो ।
जरा आतम पति को भी पाया करो ।।टेक।।

प्रेम के आगे नेम ना कोई, प्रेम से प्रकट होवे सोई,
जरा प्रेम समाधी लगाया करो ।।१।।

भक्ति वाले वस्त्र पहनो, ज्ञान के बहनों गहने पहनों,
फिर आतम पति को रिझाया करो ।।२।।

कर्म धर्म की नदिया बहादो, प्रेम का प्यारी इन्धन बनालो,
फिर ज्ञान वाली अग्नि जलाया करो ।।३।।

तीन ताप जो नित ही ग्रस्त हैं, उनका नहीं इलाज है कोई,
नित प्रेम वाली औषधि खाया करो ।।४।।

दीन होकर के क्यों फिरती हो, तुच्छ विषयों में क्यों गिरती हो,
जरा खोज अन्दर लाल पाया करो,
प्यारी ज्ञान की गंगा में नहाया करो ।।५।।

ऐहो दिल मंगदा

सच्चे दरबार कोलो ऐहो दिल मंगदा,
गुरु चरणार कोलों ऐहो दिल मंगदा,
ऐहो दिल मंगदा ते कदे वी ना संगदा ।।टेक।।

सत्तसंगियां दा संग होवे, प्रेम वाला रंग होवे,
कदे ना ओ भंग होवे, ऐहो दिल मंगदा ।।१।।

ज्ञान दा प्रकाश होवे, सच्चा विश्वास होवे,
मन मन्दिर में वास होवे ऐहो दिल मंगदा ।।२।।

लगा दरबार होवे, ज्ञान दा प्रचार होवे,
शाम दा दीदार होवे, ऐहो दिल मंगदा ।।३।।

नाम दा सरूर होवे, हृदय भरपूर होवे,
कदी न मगरूर होवे, ऐहो दिल मंगदा ।।४।।

वाणी नाल प्यार होवे, दिल विच कृष्ण मुरार होवे,
सत्संगत दी तार होवे, ऐहो दिल मंगदा ।।५।।

पूरा निदिध्यासन होवे, स्थिर मेरा आसन होवे,
एकान्त दा वासन होवे, ऐहो दिल मंगदा ।।६।।

मिट्टी दे पिंजरे विच

मिट्टी दे पिंजरे विच पंछी इक बोलदा ।
दुनियां दे दुखां विच जिंद पया रोलदा ।।टेक।।

पंछी वी सोना ए ते पिंजरा सुहाना ए ।
तांईयों चुप चाप बन के बैठा दिवाना ए ।
उड़न दी खातिर हाथ पक्षा नहीं खोलदा ।।१।।

पिंजरे दे विच बैठा लबदा ए सुख नूं ।
ताइयों चुप चाप सही जांदा सारे दुख नूं ।
खशी ते गम वाली तकड़ी है तोलदा ।।२।।

इस विच ताकत है पिंजरे नूं लई डोले ।
इस विच शक्ति है बजिया जजीरां खोले ।
बिना ब्रह्म ज्ञान दे ऐ किसे वी नहीं मुलदा ।।३।।

पिंजरे नूं तक तक मारे किलकारियां ।
जाने न मुसीबतां ऐदे विच सारियां ।
दूर दिया सोचदा ए पता नहीं सुकोलदा ।।४।।

पिंजरे नूं लगे होए जंदरे ने करमां दे ।
उते पए होय परदे ने भरमा दे ।
ताइयों घट वाले नेत्र ए नईयो खोलदा ।।५।।

※

जग विच आन के

जग विच आन के मैं कुछ वी न जानियां,
अपना स्वरूप जे मैं आप न पहचानिया ।।टेक।।

मार मार टक्करां मैं रहा सुख लभदा,
अन्दर झाती मार न दीदार कीता रब दा,
दुविधा ते दुई वाला परदा मैं तानया,
अपना स्वरूप जे मैं आप न पहचानिया ।।१।।

पढ़ पढ़ इलम मैं, अमल कमाया ना,
अहं ब्रह्म गाया पर बन के दिखाया ना,
राग ते द्वेष ईर्षा छडी न मस्तानिया,
अपना स्वरूप जे मैं आप न पहचानिया ।।२।।

भुखां देख किसे नूं न भोजन कराया ना,
प्यासा देख किसे नूं तू पानी पिलाया ना,
दूसरे दे दुःखां नूं मैं अपना न जानिया,
अपना स्वरूप जे मैं आप न पहचानिया ।।३।।

मन मेरा परखदा ऐ, रूप ते कुरूप नूं,
मेरी भुल ने भुलाया, मेरे ही स्वरूप नूं ।
ममता विच अन्ना होके, ऐवें घट्टा छानिया,
अपना स्वरूप जे मैं आप न पहचानियां ।।४।।

❋

बाजीगर की बजे बांसुरी

बाजीगर की बजे बांसुरी, माया पुर के मेले में।।टेक।।

बाजी गर ने खेल रचाया, माटी का कलबूत बनाया,
भीतर उस के आप समाया, यह ताकत अलबेले में ।।१।।

एक डोर से सब को नचावे, है पर नहीं नजर वह आवे,
उस का भेद कोई कोई जाने, खेले संग सहेले में ।।२।।

बिना पांव वह सब जग डोले, विना वाणी बह सब कुछ बोले,
बिना हाथ भूमण्डल तोले, ऐसा ज़ोर अकेले में ।।३।।

तीन लोक झोली में धर के, छिप गया आप तमाशा करके,
ब्रह्मानन्द कहे जी भर के, फंस गया जीव झमेले में ।।४।।

❋

अन्दर तेरे भरया खजाना

अन्दर तेरे भरया खजाना, चाबी संतन पास सखी,
लाय बिना नहि खुलदा ताला, मिले न दौलत रास सखी।टेक।

जितने है प्रकाश जगत में, सबका वह प्रकाश सखी,
कहीं तो स्वामी बन कर बैठा, कहीं बना है दास सखी ।।१।।

आंख तो उसको देख न सकती, आंखों में निवास सखी,
कान तो उसको सुन नहीं सकते, कानों में है वास सखी ।।२।।

अकल तो उसको समझ नहि सकती, रहता अकल में खास सखी,
सब में रहकर सबसे न्यारा, निर्मल ज्यों आकाश सखी,
परमानन्द के अन्दर ऐसे ज्यों फूलों में बास सखी ।।३।।

जीना है तो मौज से जी

जीना है तो मौज से जी, हरदम आतम रस को पी ।।टेक।।

आतम रस को पीकर प्यारे, विषयों के रस तज दे सारे,
पल पल छिन छिन घड़ी घड़ी, हरदम आतम रस को पी ।।१।।

आतम रस इक अमृत है वो जो अमृत का पान करे वो,
अजर अमर हो जाए वही, हरदम आतम रस को पी ।।२।।

जीना चाहे जग में सुख से, छुटकारा हो जावे दुःख से,
सुख का साधन है यही, हर दम आतम रस को पी ।।३।।
पाकर मानुष का यह जीवन, नर से बन जावे नारायण,
केवल तेरा लक्ष्य यही, हरदम आतम रस को पी ।।४।।

तूं अपने घर में

तूं अपने घर में जरूर आ जा,
खुदी के बदले खुदा को पा जा ।।टेक।।

न इतना अरसा परदेस में रहना,
जुदाई के तुम दुःख को न सहना,
छोड़ परदेश तूं अपने देश में आजा,
खुदी के बदले खुदा को पाजा ।।१।।

न छोड़ घरों के महल गदेले, क्यूं खाक जंगल को छाने अकेले,
तूं हद को छोड़, बेहद में आजा,
खुदी के बदले खुदा को पाजा ।।२।।

नदी ने यूं ही खुदी मिटाई, मिली समुद्र मिटी दुहाई,
खुदी मिटाके बनया है दरया,
खुदी के बदले खुदा को पा जा ।।३।।

यह नाम और रूप मिथ्या है सारा,
यह जगत बनाया सब मेरा पसारा,
तू छोड़ द्वैत अद्वैत में आ जा, खुदी के बदले खुदा को पा जा ।४।

ज़र्रे ज़र्रे में है झांकी भगवान् की

ज़र्रे ज़र्रे में है झांकी भगवान् की ।
किसी सूक्ष्म वाली आंख ने पहचान की ।।टेक।।

रोटी नामदेव ने बनाई, रोटी कुत्ते ने उठाई ।
पीछे घी का कटोरा लिए जा रहे २, ठहरो रूखी तो ना खाओ,
स्वामी घी तो लेते जाओ, क्यों रूप हो मुझसे छिपा रहे ।

तेरा मेरा इवको रूप, फिर काहे को हजूर,
मुझे ओढ़नी ओढ़ाई इनसान की, तुझे शकल मिली हैं श्वान की ।१।

निगाह मीरां की निराली, पी गई जहर की प्याली,
ऐसा गिरिधर बसा हर श्वास में २,
जब आए काले नाग, बोली धन्य मेरे भाग,
प्रभु आए आज सांप के लिबास में, आवो आवो मैं बलिहारी,
मेरे काले कृष्ण मुरारी, बड़ी कृपा है कृपा निधान की,
वारी जावाँ मैं आप के एहसान की ॥२॥

इसी तरह सूरदास, निगाह जिनकी है रास,
आईं नयनो में रोशनी ज्ञान की २
जब नयन हुए बंद, तव देखा वह आनन्द,
पत्ते पत्ते में देखा निराकार को, यही सार समझाया संसार को,
प्रेमी जन यह जहान, शहर बस्ती बीयाबान,
सारी चीजें हैं एक ही दुकान की ॥३॥

जरा जीव तो विचारो

जरा जीव तो विचारो मन में,
तेरी आत्मा का कैसा स्वरूप है ।
यह देह नहीं है तेरो आत्मा ।
तूं तो सतचित आनन्द रूप है ॥टेक॥

घट पट का दृष्टा घट पट से जैसे,
जगत में है सब से न्यारा, तीन देह का दृष्टा तूं है,
तीन देह से तू है न्यारा, तूं तो साक्षी चेतन ब्रह्म रूप है,
तूं तो अजर अमर विभु रूप है,
यह देह नहीं है तेरी आत्मा, तूं तो सतचित आनन्द रूप है॥१॥

घट उपाधि से महाकाश ज्यों, घटाकाश है कहलाता,
अन्तः करण उपाधि से त्यों, ब्रह्म जीव है कहलाता,
तज देह उपाधि ब्रह्म रूप है, जैसे बिन्दु भी सिन्ध का ही रूप है,
यह देह नहीं है तेरी आत्मा, तूं तो सत्चत् आनन्द रूप है ।।२।।

अस्ति भांति प्रिय नाम रूप यह, पांच अंश जग में मिलते,
इनमें तीन ब्रह्म रूप हैं और जगत में दो बचते,
नाम रूप जगत का ही रूप है, तूं तो अस्ति भांति प्रिय रूप है,
यह देह नहीं है तेरी आत्मा, तूं तो सत्चित् आनन्द रूप है ।३।

राजा का लड़कास्वप्ने में जैसे, अपने को निर्धन माने,
राजेश्वर तू मोह निशा में,अपने को दुखिया जाने,
तू तो जगत के भूपों का भी भूप है, अज्ञान में पड़ा भव कूप है,
यह देह नहीं हैं तेरी आत्मा, तूं तो सत्चित् आनन्द रूप है ।।४।।

*

शाम तैंथों दूर नहीं

शाम तैथों दूर नहीं तेरा वो कसूर नहीं,
देखन वाली अख जेड़ी ओदे विच नूर नहीं ।।टेक।।

शाम मिलन दा ढंग निराला, सुना जरा चित्त लाके ओ,
नुकसा जेड़ा सत्गुरु दसया, वरती उसनूं जाके ओ ।।१।।

भक्ति रूपी सुरमा लैके, ज्ञान खरल विच पालैं हो,
नाम दे वट्टे नाल रगड़ के, खूब बारीक बनाले हो ।।२।।

समता रूपी लै सिलाई, सुरमा अख विच पाले ओ,
निकल जाए अज्ञान दा पानी, हो जावे उज्याला ओ ।।३।।

जद सुरमा मैं अख विच पाया, हो गई अख नूरानी ओ,
ढूंढ ढूंढ मैं अन्दरो पाया, सोहणा दिलबर जानी ओ ॥४॥
जीव भाव और ईश भावदी, हो गई खूब मिलौनी ओ,
कण कण दे विच चेतन चमके, रल मिल खुशी मनाई ओ ॥५॥

अन्दर देख चमकारा

अन्दर देख किहा चमकारा है, जित्थे सूरज चांद न तारा है ।१।
उथे धरति आकाश न पानी है, उथे मारूत अग्नि न बानी है,
कोई रंग न रूप निशानी है, उथे केवल ज्ञान उजारा है ॥२॥
उथे जड़ चेतन दा भेद नहीं, उथे मैं तूं दा परछेद नहीं,
उथे पुण्य पाप दा खेद नहीं, उथे केवल हरि दीदारा है ॥३॥
उथे मन चित्त बुद्धि अहंकार नहीं, उथे कहन सुनन दरकार नहीं,
उथे नित्य अनित्य विचार नहीं, उथे दृश्य न देखन हारा है ॥४॥
इह बाहर जेत पसारा है, तेरे अन्दर दा लशकारा है,
इह जेतक बहु विस्तारा है, इक निर्गुण सब आकारा है ॥५॥
जो मैं कूं मैं विच पावे है, तूं मैं दे विच मिलावे है,
मैं तूं छोड़े आप समावे है, सो हेमां बूझन हारा है ॥६॥

होरी खेले आतम संग

होरी खेले आतम संग ॥टेक॥

भर पिचकारी सतगुरु डारी,
भीज गये सब अंग ॥१॥
उड़त गुलाल लाल भए सगरे,
चढ़ियो आतम रंग,
स्वास स्वास पर सोहं हंसो,
बाजत ताल मृदंग ॥२॥

आतम वेत्ती बुद्धि नायिका, नाचत होय असंग ।।४।।
सुन सुन मग्न भई सब इन्द्रिय, भूली विषयन संग ।।५।।
ब्रह्मानन्द प्रकाश्यो हेमा, होएं न कबहूं भंग ।।६।।

✲

आओ सइयों मैनूँ देओ मुबारक

आओ सइयों मैनूं देओ मुबारक
श्याम मेरे घर आया है ।।टेक।।

खोज खोज मैं घट विच पाया, ढूंढ मिटी मन तन तृप्ताया,
अनहोंदा संताप मिटाया, गद्गद् मंगल गाया है ।।१।।

मिलया मुड़ के बिछड़े नाहीं, चित्त आया मुड़ बिसरे नाहीं,
अंदर बाहिर निखड़े नाहीं, अद्भुत चोज दिखाया है ।।२।।

मैं तूं दा जद घुंड उठाया, मिलन बिछोड़ा सकल भुलाया,
निकट दूर दा भरम मिटाया, जित कित दृष्टि आया है ।।३।।

ना कोई अंदर न कोई बाहिर, ना कोई बातिन ना कोई ज़ाहिर,
ना कोई ज़ाहिल ना कोई माहिर, आपे आप समाया है ।।४।।

जद इह रमज़ अनोखी पाई, बिसर गयी सब जग चतुराई,
सुध बुध रांझन विच समाई, तन दा मान गंवाया है ।।५।।

खुशरंगी चोला गल पाया, गम अन्दोह तमाम मिटाया,
गैरीयत दा नाम गंवाया, हेमां जशन मनाया है ।।६।।

✲

हम तो तेरे हैं मस्ताने

हम तो तेरे हैं मस्ताने हम ज़ेर जबर को क्या जाने ।टेक।

यह रंग जो तेरी माया का भूले जीवों को सताता है,
हम रंगे हुए तेरे रंग में हैं, माया के रंग को क्या जाने ।।१।।

वेदों का हम को ज्ञान नहीं, तू आता हमारे ध्यान नहीं,
जब समदर्शी हैं नाम तेरा, अपने से जुदा फिर क्या जाने ।।२।।

हम आनन्द रस के भोगी हैं, नहीं जन्म मरण के रोगी हैं ।
हम केवल निश्चल योगी हैं, कलियुग सतयुग को क्या जाने ।३।

जो देह दृष्टि में रहते हैं, वह तीन गुणों को सहते हैं,
माया के रंग में बहते हैं, वे निज स्वरूप को क्या जाने ।।४।।

जिन निज स्वरूप को जाना है, माया का पता क्या पाना है,
वहां अहं ब्रह्म का ताना है वे द्वैत भाव को क्या जाने ।।५।।

जो नार पिया संग जाय बसो, गुड़ियों के खेल को क्या जाने
हम खुद मस्ती में मस्त हुए, दुनियां की खबर को क्या जाने ।६।

हम खुद मस्ती में रहते हैं, नहीं ऊँच नीच में बहते हैं ।
जो आए बने सब सहते हैं, दुनियां भी हम को क्या जाने ।।७।।

आनन्द स्रोत बह रहा

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है,
अचरज है जल में रह के मछली को प्यास है ।।टेक।।

फूलों में जैसे सुवास, ईख में मिठास है,
भगवान का त्यों विश्व के कण कण में वास है ।।१।।

टुक ज्ञान चक्षु खोल के ज़रा देख तो सही।
जिसको तूं ढूंढता वह सदा तेरे पास है ।।२।।

कुछ तो समय निकाल, आतम शुद्धि के लिए,
नरजन्म का उद्देश्य न केवल विलास है ।।३।।

आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक,
जब तलक तूं प्रकाश, इन्द्रियों का दास है ।।४।।

मेरे मना अन्तर्गत सुख पाय

मेरे मना, अन्तर्गत सुख पाय ।।टेक।।

अन्तर्गत बिन सुख नहीं रंचक, मुनिवर भूप सुनाय ।।१।।
ब्रह्मलोक लौं सुख सब मिथ्या, विषवत् जान भुलाय ।।२।।
देह असत्य अनातम दुःखमय तांसों प्रीत हटाय ।।३।।
हृद अन्तर शान्तातम पूरण, हेमां निशि-दिन ध्याय ।।४।।

मैं तां बसां तेरे मन में

मैं तां वसां तेरे मन में, तूं ढूंढे जंगल वन में ।।टेक।।

जहां कहां मैं हाजर हूं, व्यापक जड़ और चेतन में,
काजल रहे जैसे अखियन में, मैं तां बसां तेरे मन में ।।१।।

मैं अपनी मौज में खेल किया, भरम के कारण द्वैत पड़ा,
तागा रहे जैसे मोतियन में, मैं तां बसां तेरे मन में ।।२।।

एकान्त बैठ के ध्यान लगा, झाती मार के देख जरा,
प्रेमी वेख तूं अन्दर वड़के, मैं तां बसा तेरे मन में ।।३।।
ध्यान लगावी एकान्त बैठ के आन मिले तुझे पल क्षण में ।।४।।

रम रहे आतमा राम

रम रहे आतमा राम सभी के मन मन्दिर में ।।टेक।।

गूढ़ रहस्य यह कोई कोई जाने,
जब होवे निष्काम, सभी के मन मन्दिर में ।।१।।

बिन जाने कंगाल बना है, सत चेतन सुख धाम ।।२।।

जग मग जग मग ज्योति प्रकाशे, हर दम आठों याम ।।३।।

*

इसी काया का होवे विनाश है

इसी काया का होवे विनाश है ।
तूं तो साक्षी स्वयं प्रकाश है ।।टेक।।

पंच भूतों का तन विस्तारा, तूं तो द्रष्टा है जानन हारा,
तेरा घट-घट में रहता निवास है ।।१।।

जैसे गहनों में सोना ही पाया, तैसे कण कण में तूं ही समाया,
जग तेरा ही लीला विलास है ।।२।।

जाग जल्दी ये सपने की माया, आपको ही भूलकर के डराया,
स्वामी बन के बना क्यों दास है ।।३।।

भूल तेरी है तूं ही मिटा ले, ब्रह्म पूरण है निश्चय जमा ले,
मिटे विज्ञान कर्मों का त्रास है ।।४।।

*

शिवोहऽम् मुख से बोलो

शिवोऽहम् शिवोऽहम् यही मुख से बोलो,
सदा सच्चिदानन्द में मस्त डोलो ।।टेक।।

भरा मैल जो मन के अन्दर दिलों का,
इसे जाके सत्संग-गंगा में धो लो ।।१।।

गुरु के चरण रज का अन्जन बना लो,
लगा कर तुरन्त ज्ञान की दृष्टि खोलो ।।२।।

अविद्या के श्रम से थकाये हो जो तुम,
विद्या शान्ति शैय्या में जाकर के सोलो ।।३।।

षहुं दिश में निज सुख का व्यापार कर लो ।
तराजू में 'विज्ञान' को नित्य तोलो ।।४।।

*

मैं राम हो गया

मैं राम हो गया जी मैं राम हो गया,
मैं तां जीव भाव नूं छड के, हुन मैं राम हो गया ।टेक।

मैं तो सत्चित् आनन्द रूप, मैं तो सारे जगत का भूप,
गई हृदय ग्रन्थि छूट, जी मैं राम हो गया ।।१।।

पंच कोष त्रैगुण से न्यारा, मैं तो सब नूं देखन हारा,
मैं तो सब में सबसे न्यारा, जी मैं राम हो गया ।।२।।

मैं तो घट घट दे विच वसदा, किधरे रोंदा किधरे हसदा,
मुझसे जुदा न कोई दिसदा जी मैं राम हो गया ।।३।।

न मैं कर्ता बन के रहदां, न मैं भोक्ता बनके सहदां,
बन के साक्षी राज करेदां, जी मैं राम हो गया ।।४।।

मैं तो सपने विच जग डीठा, सतगुरु झूठा आन के दीठा,
मैं जागते दर्शन कीता, हुन मैं राम हो गया ।।५।।

सत्गुरु मस्ती दा जाम पिलाया, मैनूं मस्त दीवाना बनाया,
ओ मैं ते मस्त होके गाया जी, मैं राम हो गया ।।६।।

रख सुरती नूँ अन्दर

रख सुरती नूं अन्दर करके, रख वृति नू अन्दर करके,
तेरा हो जाय बेड़ा पार रे, रख सुरती नूं अन्दर करके ।टेक।

तेरे अन्दर सिंहासन धरया, जी ओ हीरयां मोतियां जड़या,
ओथे हीरयां दा व्यापार रे ।।१।।

तेरे अन्दर बांसुरी बजदी जीओ बजदी ते प्यारी लगदी,
ओ तेरे अन्दर कृष्ण मुरार रे ।।२।।

तेरे अन्दर ब्रह्मा ते विष्णु, ओ प्यारे बन बन ढूंढे किस नूं,
तेरे अन्दर ज्योति अपार रे ।।३।।

ब्रह्माकार वृत्ति मेरी

ब्रह्मा कार वृति मेरी निश दिन जागी रहे,
मन पदार्थों से सदा ही उदासी रहे ।।टेक।।

हो जाऊं मैं तुम संग ऐसी मगन,
न डुलावे विश्व मोहिनी, कर दो ऐसा यतन,
मन तेरा ही सदा अनुरागी रहे ।।१।।

सब कुछ करती मैं नित ही अकर्ता रहूं,
ध्यान तेरा मैं निश दिन धरती रहूं,
मन तेरा ही सदा अनुरागी रहे ॥२॥

जगत दूषण नहीं है, भूषण मेरा,
न कोई दुश्मन दिस्से, सब साजन मेरा,
मन पदार्थों से सदा ही उदासी रहे ॥३॥

सत्गुरु तुम संग लगन मेरी लागी रहे,
वृति तेरे ही चरणों में जागी रहे ॥४॥

❊

वासना त्याग मना

वासना त्याग मना, पालै आत्मानन्द नूं ॥टेक॥

विषयां विकारां वाली ओढ़नी क्यों ओढ़ बैठा,
अपने स्वरूप वलों मुख कानूं मोड़ बैठा,
आनन्द पा लै मनां परे सुट गन्ध नूं ॥१॥

द्वैत वाली फूड़ी हुन छेती छेती झाड़ दे तूं,
भरम वाले परदे तूं छेती मनां फाड़ दे तूं,
एकतादी पहन चोली, लै लै तू सुगन्ध नूं ॥२॥

हाड़ मांस नाल कानूं, इतना प्यार करना,
बिच तूं चौरासियां दे, धक्के जा के कानूं खाना,
चेत मना चेत; छुड़ा लै इस फन्द नूं ॥३॥

यही गुरु वेद सब एहो बतांवदे,
अहम् ब्रह्म अस्मि वाला सबक पढ़ावंदे,
निश्चय विच विलम्ब न लांवी, छोड़ दे विलम्ब नूं ॥४॥

इस बाझों बन्दे नहीं तेरा कल्याण होना,
तेरा जेड़ा बोझा इस नूं किसे वी नहीं ढोना,
बन के हुशियार मनां पा लै परमानन्द नूं ॥५॥

✲

लग गई तन में

लग गई तन में, समझ लई मन में,
ओ तेरा मेरा न्याय होगा सतसंग में ॥टेक॥

ऊंची अटारी खोल किवाड़ी मैं तो चढ़ी री गगन में ॥१॥

निर्भय ढोल बजे री भक्ति का,
अनहद बाजा बजे री मन्दिर में ॥२॥

निर्गुण सेज बिछी री मन्दिर में,
अपने पिया संग सोई री मगन मैं ॥३॥

कहत कमाली कबीर जी की बेटी,
पकड़ डुबोई री गुरु ने हरि रंग में ॥४॥

✲

प्रेम दा प्याला

मन प्रेम दे प्याले पी पी रजदा नहियों,
मन गुरां दे द्वारे उते हटदा नहियों ॥टेक॥

लोकी कहंदे प्रेम सौखा, यह तो है बड़ा ही औखा,
ऐथे जान दा भी धोखा, बंदा बचदा नहियों ॥१॥

जिसनूं लगे प्रेम तीर, उसदे कलेजे विच पीड़,
भावें मिले नदी चीर, पिछे हटदा नहियों ॥२॥

उथे दसवां द्वारा, लूटे प्रेम दा नजारा,
ऊंचा दिसदा चौबारा, पहुंच सकदा नहियों ॥३॥

जाइए प्रभु जी दे द्वारे, ओही केवल सानूं तारे,
सांनू प्रभु बिना होर कोई दिसदा नहियों ॥४॥

सुबह शाम जिसको

सुबह शाम जिसको तेरा ध्यान होगा,
बड़ा भाग्यशाली वह इन्सान होगा ॥टेक॥

उसी को तो हरदम लगन तेरी होगी,
कि जिस पर तूं खुद ही मेहरबान होगा ॥१॥

तेरे नाम से जो भी आलस करेगा,
समझ लो बड़ा ही वह नादान होगा ॥२॥

जहां हर घड़ी तेरा भजन सुमिरन होगा,
बैकुण्ठ सा वह स्थान होगा ॥३॥

मनवा तू निर्भय पी प्रेम प्याला,
पीएगा इसे जो भाग्यवान होगा ॥४॥

मुरार नाल अखियां

लग गइयां जिदियां मुरार नाल अखियां,
फेर नहियों लांवदा संसार नाल अखियां ॥टेक॥

जिन्हां अखियां दे विच वसया मुरार वे,
ओनूं फेर नज़र न आंदां संसार वे,
डुल डुल पैंदियां प्यार नाल अखियां ॥१॥

ओदियां राहां विच मैं अखियां विछानियां,
अंसुआ दी धार मैं चरणां विच लगानियां,
लग जान मेरियां करतार नाल अखियां ॥२॥

ऐनां अखियां दी मीरा वी दीवानी सी,
वार दिती ओने अपनी सारी जिन्दगानी सी,
लगियां ने ओदियां करतार नाल अखियां ॥३॥

भक्त सुदामा भी दर तेरे आया सी,
चावलां दी मुट्ठी भर भेंट ओ ल्याया सी,
प्रेम दियां भेंटां तूं प्यार नाल फकियां ॥४॥

दुर्योधन दे मेवे तूं त्यागे सी,
साग विदुर घर प्रेम नाल खादे सी,
प्रेम भरे हृदय नाल भोग लगानियां ॥५॥

मेरा चोला रंग दे

रंगन वाले देर क्या है मेरा चोला रंग दे ॥टेक॥

जितने रंगों में मैंने आज तक रंगाये थे,
पर वो सारे फीके निकले गूढ़ा रंग रंग दे ॥१॥

मैं जिधर भी देखती हूं, रंग तेरा है दीखता,
पर मैं इक बेरंग हूं मैंनूं, गूढ़ा रंग रंग दे ॥२॥

मैं तो जानूंगी तभी, तेरियां रंग अंदाजीयां,
जितना धोऊं उतना चमके, ऐसा गूढ़ा रंग दे ॥३॥

जीवन की घड़ियां

जीवन की घड़ियां वृथा न खो,
ओम् जपो हरि ॐ जपो ॥टेक॥

ओम् ही सुख का सार है, ओम् ही प्राण आधार है,
माया की प्रीति मन से तजो, ओम् जपो हरि ॐ जपो ॥१॥

चोला मिला है चर्म का, करने को सौदा धर्म का,
कौड़ी के बदले हीरा न खो, ओम् जपो हरि ॐ जपो ॥२॥

मन में बिठा ले ओम् को, साथी बना ले ओम् को,
चादर लम्बी तान न सो, ओम् जपो हरि ॐ जपो ॥३॥

मन की गति सम्भालिए, ईश्वर की ओर डालिए,
नौका जीवन की सत्गुरु को दो, ओम् जपो हरि ॐ जपो ॥४॥

हर में हरि पहचान लो, श्वासों की कीमत जान लो,
नर तन का पाना फिर हो न हो, ओम् जपो हरि ॐ जपो ॥५॥

मेरा मन सदा पुकार करे

मेरा मन सदा पुकार करे, गोबिन्द हरे गोपाल हरे,
प्रहलाद ने तुझे ध्याया सी, थम्बे में दर्श दिखाया सो,
हुन मैनूं भी दर्श दिखा शामा ॥ १॥

जदों गज ने तुझे ध्याया सी, हरि नंगे पैरी आया सो ।
हुण मेरी भी वारी आ शामा ॥ २॥

जदों द्रोपदी ने तुझे ध्याया सी,
ओदा पल विच चीर बढ़ाया सी ।
हुन मेरी भी लाज बचा शामा ॥३॥

दासी ने तुझे ध्याया है, तेरी चरणो शीश निवाया है,
हुन मेनूं भी देवो तार शामा ॥४॥

अलमस्त दीवानी

अलमस्त दीवानी होइयां प्रेम दीवानी,
होइयां प्रेमदीवानी लाके लगन होइयाँ बावरियां ।टेक।

ओथे चन्दा न सूरज, ओथे चन्दा न सूरज,
ओथे चन्दा न सूरज, बिना चांद होइयां चांदनियां ।।१।।

ओथे बादल न बदली, ओथे बादल न बदली,
ओथे बादल न बदली, बिन बदलों बूंदां बरस रहियां ।।२।।

ओथे दीवा न बाती, ओथे दीवा न बाती,
ओथे दीवा न बाती, बिन बत्तियों जोतां जाग रहियां ।।३।।

ओथे ब्रह्मा न विष्णु, ओथे ब्रह्मा न विष्णु,
ओथे ब्रह्मा न विष्णु, शिव जी ने लाईयां समाधड़ियां ।।४।।

ओथे बहिन न भाई, ओथे बहिन न भाई,
ओथे बहिन न भाई, सोऽहं सोऽहं सहेलड़ियां ।।५।।

तेरे अन्दर सच खण्ड डेरा

तेरे अन्दर सच खण्ड डेरा अन्दर ज्योति प्यारे दी,
अन्दर जोत प्यारे दी कि अन्दर जोत मालिक दी ।टेक।

नी तूं अन्दर वढ़ के देख, तेरे अन्दर गुरां दी सेज ।
बाहर तपदी ए बालू रेत, अन्दर जोत प्यारे दी ।।१।।

जे तूं अन्दर अख न खोली, बाहर ऐवें जिन्दड़ी रोली ।
अन्दर सोऽह्म सोऽह्म बोली, अन्दर जोत प्यारे दी ।।२।।

अन्दर मार लवीं तूं झात जोत जगदी है दिन रात ।
सूरज चांद करन प्रकाश, अन्दर जोत प्यारे दी ।।३।।

तेरे अन्दर अनहद बाजा, श्रोतां कहंदे आजा आजा ।
सतगुरु हृदय विच समा जा, अन्दर जोत प्यारे दी ।।४।।

*

हम अपनी झांकी

हम अपनी झांकी देख चुके,
फिर दूसरी झाँकी क्या देखें,
जब अमर निशानी हासिल की,
फिर फानी दुनियां क्या देखें ।।टेक।।

महलों में रहें सड़कों पर चलें, चाहे कुछ भी मिले या ना मिले ।
दीदार शहन शाह का हुआ, तस्वीर गलामी क्या देखें ।।१।।

जब समझ गये फिर उलझे क्यों,
जिसे ढूंढते थे, उसे पा ही लिया ।
जब दिल की गली में रौनक है,
बाजार में जा कर क्या देखें ।।२।।

हसरत से भरी लोगों की खुशी पल पल में रंग बदलती है ।
हम पूरण सुख में चूर हुए, फिर नूर बनावटी क्या देखें ।।३।।
इन्सान की हर इक आंखों में, अपनी ही सूरत दीखती है ।
मतलब के हम सब एक हैं फिर भेद की दृष्टि क्या देखें ।।४।।

*

चुप चुपीते पींदे जाइए

चुप चुपीते पींदे जाइए, नशा यह इलाही है,
नशा पीके मौजाँ लइए, बेगम दी बादशाही है ।।टेक।।

इस नशे दी गल की दसां, जेहड़े पी गए, जी गए जी,
हर कोई इस नूं पी नहिं सकदा, बिरले इसनूं पी गए जी ।।१।।

जेकर सच्ची मस्ती चाहें, मस्तां दी महफिल विच आ,
मस्तां दी महफिल विच आ, पुरुषार्थ करके अग्गे आ ।।२।।

अमर आतमा मौज दिखावे, घट में ब्रह्म लखाया जी,
न कोई राग न द्वेष न ओथे, आपे मौजां मान्दा जी ।।३।।

मेरी तेरी भरम भुला के, दूई द्वैत गंवा बैठे ।।४।।
लामकानी वासा होया, दुःख क्लेश मिटा बैठे ।।४।।

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरिया, मस्ती मौजां लैंदी ए,
मस्तां दी महफिल दे अन्दर मस्ती मस्ती रहंदी ए ।।५।।

*

तूं न शरीर है

तूं न शरीर, तेरा न शरीर है,
यह शरीर जानिए वसन्ती चीर है ।।टेक।।

श्री कृष्ण देव इसमें विराज मान है,
तेरा स्वरूप तुझसे नहिं आन है,
किसी के न पूत तुम तो अनादि हो,
सपने दा खेल तुम निरउपाधि हो ।।१।।

पंचभूत देह विषै क्यों है रोवता,
अपना स्वरूप ज्योत क्यों नहिं जोवता,
शुद्ध ते निरंजन विकार हीन तूं,
नाम रूप रहित कर देख चेतन तूं, ।।४।।

शुद्ध ते निरंजन तुम्हारा रूप है,
मन बुद्धि इन्द्रियां सभी का भूप है,

माता पिता भ्राता तेरा मेरा भासदे,
माया रचे सारे फूल ने आकाश दे ।।३।।

अहंगता ते ममता निवारो मन की,
मृगनीर से न जावे प्यास मन की,
तन है विकारी घटे बढ़े नाश हो,
तुम सुखरूप सदा एक रस हो ।।४।।

पाई है जुदाई सारी नाम रूप ने,
रंग रंग दी पोशाक पाई राम ने,
कंठे कड़े मुरकियां सभी अनूप ने,
सोने ने धार लए कई रूप ने ।।५।।

सोने से अलग क्या रूप छापदा,
एक ही अनेक रूप होके भासदा,
जिसको होवे ऐसा शुद्ध ब्रह्म ज्ञान जी
सुख दुख में वह सदा रहे समान जी ।।६।।

सच्चिदानन्द तूं

सच्चिदानन्द तूं, नित्य निर्द्वन्द तू, जीव माना,
हो गया तूं ही देह में दीवाना ।।टेक।।

अपने अज्ञान से तूं भरमाया,
शेर होकर के भैं-भैं मचाया,
मेरा घर द्वार है, मेरा परिवार है, यह खजाना,
सीपी में चान्दी देख लोभाना ।।१।।

हो के अविनाशी जन्मा मरा है,
रज्जू में सर्प देखा डरा है,

ये ही भ्रम भूल है, तुझ को यही शूल है, जो भुलाना,
झूठे सपने को ही सत्य माना ॥२॥

तेरी माया ही तुझ को रिझाती,
खेल रच रच के तुझ को दिखाती,
खेल में खेलता, दुःख नित झेलता, ना अघाना,
चाहे मरुस्थल के जल में नहाना ॥२॥

देह मानव की हीरा सी पाई,
कर ले विज्ञान कुछ तो कमाई,
शुद्ध दर्पण बना,रूप लख आपना जो पुराना
यदि है पूर्ण आनन्द पाना ॥४॥

*

जरा सोच विचार के

जरा सोच विचार के मुझको बता
है उपजा कौन और कौन मरा ॥टेक॥

पानी से उपजा बुलबुला, पानी में नाच नचाता रहा।
जल होकर जल में जाके मिला,
कहो कौन उपजा और कौन मरा ॥१॥
मिट्टी से निकला है पौधा, मिट्टी में है वह खड़ा रहा।
आखिर मिट्टी में समा गया,
कहो कौन उपजा और कौन मरा।

देह तेरा तत्त्वों से निकला,
तत्त्वों से पला तत्त्वों में रहा।
फिर तत्त्वों में ही समा गया,
कहो कौन उपजा और कौन मरा ॥३॥

सोने ने कंगन नाम धरा, रंगरूप उसका न जरा बदला।
हर हाल में सोना सोना रहा,
कहो कौन उपजा और कौन मरा ।।४।।

तत्त्व हैं तरंग चिद् सागर का चिद् बिन रंचक नहीं है नहीं था।
हैमां चिद्घन पूरण सत्ता, कहो कौन उपजा कौन मरा ।।५।।

*

ज़रा तो इतना बता दो भगवन्

जरा तो इतना बता दो भगवन्,
लगी यह कैसी लगा रहे हो,
मुझी में रह कर मुझी से दाता,
यह खोज कैसी करा रहे हो ।।टेक।।

हृदय भी तुम हो तुम्ही हो प्रीतम,
प्रेम भी तुम हो तुम्हीं हो प्रेमी,
पुकारता दिल तुम्हीं को फिर क्यों,
जो दिल में तुम्हीं समा रहे हो ।।१।।

दृश्य भी तुम हो तुम्ही हो नयना,
क्रिया भी तुम हो तुम्ही हो करना,
तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को ढूंढूं,
यह रचना कैसी रचा रहे हो ।।२।।

गीत भी तुम हो, तुम्हीं हो रसना,
संगीत भी तुम हो तुम्ही हो रचना,
स्तुति तुम्हारी तुम्ही से गांऊ,
यह लीला कैसी दिखा रहे हो ।।३।।

कर्म भी तुम हो, तुम्ही हो कर्ता,
धर्म भी तुम हो तुम्ही हो धर्ता,
निमित्त कारण मुझे बना कर,
यह नाच कैसा नचा रहे हो ।।४।।

✻

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म मैं

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म मैं, अजर अमर और अविनाशी,
इसी ज्ञान से मोक्ष हो जावे, कट जावे यम की फांसी ।टेक।

अखण्ड सदा सुख जिस का कोई, आदि मध्य अवसान नहीं,
यही ब्रह्म है मनन निरन्तर, करे मोक्षहित सन्यासी ।।१।।

कभी न छूटे दुःख पीड़ा से, जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं·
जिसे ब्रह्म का ज्ञान हो जाये, पड़े न भोगनी चौरासी ।।२।।

अदृष्ट अगोचर सदा अदृष्टिमय, जिस का कोइ आकार नहीं,
नेति नेति कहें निगम ऋषीश्वर, पाते जिस का पार नहीं ।।३।।

सर्व देशी है ब्रह्म हमारा, एक जगह अवसान नहीं,
रमा है सब मे मुझसे कोई भिन्न वस्तु इन्सान नहीं ।।४।।

अलख ब्रह्म लिया जान जगत में, कार्य नहीं व्यवहार नहीं,
खोल जरा टुक दिल दियां अखियां, कौन तरफ गुलज़ार नहीं ।
सत्य स्वरूप आनन्दघन है, जिसे कहें घट घट वासी ।।३।।

✻

हुन जीवन दा मैनूँ आनन्द

हुन जीवन दा मैनूं आनन्द आ गया,
मेरे घर शाहों दा शाह आ गया ।।टेक।।

ब्रह्मानन्द की सेजां पै मौजा उड़ावां,
मेरा असली खजाने ते हथ पै गया ॥१॥

चढ़ी मैं तख्त मैंनूं देओ नी वधाईयां.
मेरा असली खजाने ते हथ पै गया ॥२॥

मिली मैनूं मन्जिल, मैं लग गई किनारे,
मैनूं किनारे लगावन वाला आ गया ॥३॥

कोई बोल निन्दा दा लगदा नहीं मैनूं,
कोई ऐसा ललारी ओ रंग ला गया ॥४॥

कोई गैर नजरां विच दिसदा नहीं मैनूं
मेरी ही नजर विच ओ नजर आ गया ॥५॥

✲

किसे नाल राग नहीं

किसे नाल राग नहीं, किसे नाल द्वेष नहीं,
आत्मा आनन्द मैनूं कोई भी क्लेश नहीं ।टेक॥

सुख रूप आत्मा मैं, किदे नाल प्यार जौड़ां,
सारे मेरे अपने मैं, किदे बलों मुख मोड़ां,
किसी दा भी मेरे नालों वखरा कोई वेष नहीं ॥१॥

कौड़ा कानूं बोलां मेरा, किसे नाल वैर नहीं,
सारे मेरे अपने, कोई मेरा गैर नही,
ऐस जहान उत्ते वसना हमेश नहीं ॥२॥

न किसी दा हाकिम बन के, हुकम चलावां मैं,
न किसी दा दास बन के, हथ नूं फैलावां मैं,
नाले ए जहान मेरा असली ते देस नहीं ॥३॥

किसे नाल लेन देन, स्वार्थ व्यवहार नहीं,
बिना नट-नागर दे, किसी नाल प्यार नहीं,
हरि जी दे नाम जेहा कोई उपदेश नहीं ॥४॥

अन्दरों ते बाहरों चोला, इक्को रंग रंगना,
दिल दी स्पष्ट गल, आखनों नहीं संगना,
कपट फरेब दा बनाना कोई वेष नहीं ॥५॥

दासी जे तेरा इक्को प्रभु नाल प्यार है,
फेर कानूं दिल विच हुई दा विचार है,
भुल सकदा कदे मैनूं ब्रह्म उपदेश नहीं ॥६॥

✲

मेरा सत्चित् आनन्द रूप कोई कोई

मेरा सत्चित् आनन्द रूप, कोई कोई जाने रे ॥टेक॥

द्वत वचन का मैं हूं दृष्टा, मन वाणी का मैं हूं सृष्टा,
ज्यों माला में सूत, कोई कोई कोई कोई जाने रे ॥१॥

तीन अवस्था से मैं न्यारा तीनों गुण मेरा पासारा,
मैं हूं साक्षी भूप, कोई कोई जाने रे ॥२॥

चतुष्टय अन्त:करण भी मैं हूं, चतुष्टय साधन सम्पन भी मैं हूं,
मैं हूं ब्रह्मस्वरूप, कोई कोई जाने रे ॥३॥

पंचकोष मेरे धर्म नहीं हैं, पंचप्राण मेरे कर्म नहीं है,
अनुभव सिद्ध अनूप, कोई कोई जाने रे ॥४॥

✲

नशा मेरा इलाही है

नशा मेरा इलाही है, मैं पी पी मस्त रहता हूं ।।टेक।।

विश्व सब लहर है मेरी, महासागर हूं मैं इसका,
न घटता हूं न बढ़ता हूं सदा समहाल रहता हूं ।।१।।

कभी चढ़कर न यह उतरे नशा मेरा इलाही है,
मेरी यह खुद की हैं मस्ती, मैं पी पी मस्त रहता हूं ।।२।।

न आना है न जाना है, सभी मैं-मैं ही सब कुछ हूं,
नशे में सैर है अपनी, मैं पी-पी मस्त रहता हूं ।।३।।

मैं वाणी का प्रकाशक हूं, है हरजां मौज यह मेरी,
मेरी ही मौज हरजां में मैं पी पी मस्त रहता हूं ।।४।।

सच्चिदानन्द मैं

सच्चिदानन्द मैं नित्य निर्द्वन्द मैं, ब्रह्म जाना,
मेरा मिट गया आना जाना ।।टेक।।

मैं व्यापक सदा से रहा हूं, मैं अनादि सदा से रहा हूं,
देहाध्यास छोड़ा, मन को निज में मोड़ा, कारण जाना ।।१।।

मुझमें देह अभिमान नहीं है, मुझमें मानगुमान नहीं है,
सुख दुःख से परे, मान अपमान से परे, मैं पहचाना ।।२।।

मेरा स्थान या मान नहीं है रूप रेखा न मेरी कहीं है,
स्थान मान से परे, रूप रेखा से परे, मैं अमाना ।।३।।

मेरा देवदत्त नाम नहीं है, वर्ण आश्रम से काम नहीं है ।
कल्पना जब मिटी, जीव ग्रन्थि कटी, मैं समाना ।।४।।

शिवोऽहं शिवोऽहं

शिवोऽहं शिवोऽहं शिवा केवलोऽहम्,
तत्वमसि सोऽहं शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।।टेक।।

नही बुद्धि मन भी नहीं चित्त हूं मैं,
सदा एकरस हूं मैं साक्षी शिवोऽहम् ।।१।।

न मैं ज्ञान इन्द्रिय न मैं कर्म इन्द्रिय,
नहीं प्राण संज्ञा हूं द्रष्टा शिवोऽहम् ।।४।।

मैं तन भी नहीं हूं न तन भी है मेरा,
वही सप्तधातु हूं अविचल शिवोऽहम् ।।३।।

न मैं पंच वायु नहीं पंचकोशा,
नहीं भूत पांचों सनातन शिवोऽहम् ।।५।।

नहीं लेश भी पुन्य पापों का मुझमें,
अकर्ता अभोक्ता अजन्मा शिवोऽहम् ।।६।।

नहीं सुख दुःखों का आवेश मुझमें,
नही वर्ण आश्रम का बन्धन शिवोऽहम् ।।७।।

न माता पिता बन्धु कोई है मेरा,
सभी भूत प्राणी का कारण शिवोऽहम् ।।८।।

सभी ठौर व्यापक मैं रहता निरन्तर,
सभी में सभी से निराला शिवोऽहम् ।।९।।

सदा शुद्ध हूं मैं सदा मुक्त हूं मैं,
निराकार मैं निर्विकारी शिवोऽहम् ।।१०।।

नित्योऽहम् परोहं शिवा केवलोऽहम्,
यह सत्गुरु की वाणी सदा ही शिवोऽहम् ।।११।।

अरदास

दो जलचर दो थलचर दो विप्र दो शूर,
दो बन माँहि करे तपस्या भक्त हिरदे भरपूर ।टेक।

प्रथम भगवती सुमरिए, पुनः विष्णु लई ध्याय,
वराह कूर्म ते मच्छ जी, सब थांई होय सहाय ।।१।।

पुनः जप नरसिंह मनाइए, जिन भक्तन कष्ट मिटाय,
श्रीवामन हरि का नाम ले घर आवे नवनिधि धाय ।

श्री रामचन्द्र को सुमरिए सब थांई होय सहाय ।
नवनिधि, चौरासी अड्डे, तीन सौ साठ तीर्थों का ध्यान ।

धरके सब बोलना जी श्रीराम श्रीराम
चार खानी चार बाणी, चन्द्र रूप पवन पानी, धरती
आकाश, पाताल, तैंतीस करोड़ देवताओं का ध्यान,
धरकर बोलना जी श्रीराम श्रीराम ।

ध्रुव भक्त, प्रह्लाद भक्त, राजा हरिश्चन्द्र तिनकी
निर्मल कमाई का ध्यान धर के बोलना जी श्रीराम श्रीराम
श्री गंगा यमुना सरस्वती नर्मदा कावेरी गोदावरी आदि पावन
नदियों का ध्यान धरकर बोलना जी श्रीराम श्रीराम ।

श्री जगन्नाथ, अमरनाथ, केदारनाथ,
द्वारका नाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वर,
आदि तीर्थों का ध्यान धर कर बोलना जी श्रीराम श्रीराम ।
सनक सनन्दन सनातन सनतकुमार,
आदि महर्षियों की पावन तपस्या
का ध्यान धरके बोलना जी श्रीराम श्रीराम ।।

हे सर्वज्ञ, हे सर्वशक्ति मान, हे पतितपावन, दीनदयालु प्रभु,

आपके प्यारे सेवकों ने शुद्ध भावना करके प्रसाद भेंट किया है। प्रसाद आपकी रसना लगे। बालभोग सब सेवकों को मिले। सबको सुमतिदान मिले। श्वास श्वास आपका नाम स्मरण आवे। हर प्रकार से आप सहायक हो। कथा कीर्तन सन्ध्या आरती नित्यनेम जप की अरदास। भूल चूक अक्षर बाधा घाटा माफ, भक्तों के कारज रास। जहां जहां भक्त तहां तहां रक्षक भगवान।

रामनाम का बोलबाला रैन दिबस सुखाला, शम्भु जयकारा हर हर महादेव।

✻

अद्वैत कीर्त्तन

सत्यमज्ञान अनन्त ब्रह्म एकोमेव अद्वितीय ब्रह्म,
शुद्धम् शान्त अनन्तम् ब्रह्म, विज्ञानम् आनन्दम् ब्रह्म।
चिदानन्द चिदानन्द चिदानन्द हूं,
हर हाल में मैं मस्त सच्चिदानन्द हूं ॥
शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् हूं,
शिवा केवलोऽहं चिदानन्द हूं ॥
साक्षी शिवोऽहं साक्षी शिवोऽहं।
यह सत्‌गुरु की वाणी मैं साक्षी शिवोऽहम् ॥

✻

॥ इति श्री कमलनयन भजन मञ्जरी समाप्ता ॥

श्री सत्यधर्म मण्डल के प्रकाशन

		रुपये
१.	श्री अद्वैत सिद्धान्त (हिन्दी में)	४०-००
२.	श्री सिद्धान्त पुष्पावलि ”	७-००
३.	श्री शान्ति सरोवर ”	५-००
४.	श्री बाल रक्षा ”	२-००
५.	श्री हरि भक्ति माला ”	२-००
६.	सन्त दर्शन ”	५-००
७.	आत्मानुभव का मार्ग ”	२-००
८.	अद्वैत दर्शन ”	१-००
९.	अद्वैत विहार ”	१-००
१०.	नित्य नियम ”	०-५०
११.	Essays on Vedanta (अंग्रेजी)	५-००
१२.	ज्ञान यात्रा (सिन्धी)	५-००
१३.	शुद्धाहार और स्वस्थ जीवन (हिन्दी)	७-००
१४.	विवेकमणि (हिन्दी-अंग्रेजी)	३ ००
१५.	सिद्धांत पंचक (हिन्दी)	३-००
१६,	Code of morals (अंग्रेजी)	१-००
१७.	ज्ञान पुष्प (सिन्धी)	५-००
१८.	आरोग्य दर्पण ”	७-००
१९.	सतुलित आहार (हिन्दी)	२-००
२०.	अद्वैत वाटिका ”	१-००
२१.	अनुभव-सुधा ”	५-००
२२.	विवेक मणि (सिन्धी)	१-००
२३.	गुरुदेव के पत्र (हिन्दी)	६-००
२४.	ईश देवोपासना (” तथा संस्कृत)	५-००
२५.	श्री सत्यधर्म भजन कीर्त्तन मञ्जरी (हिन्दी)	५-००

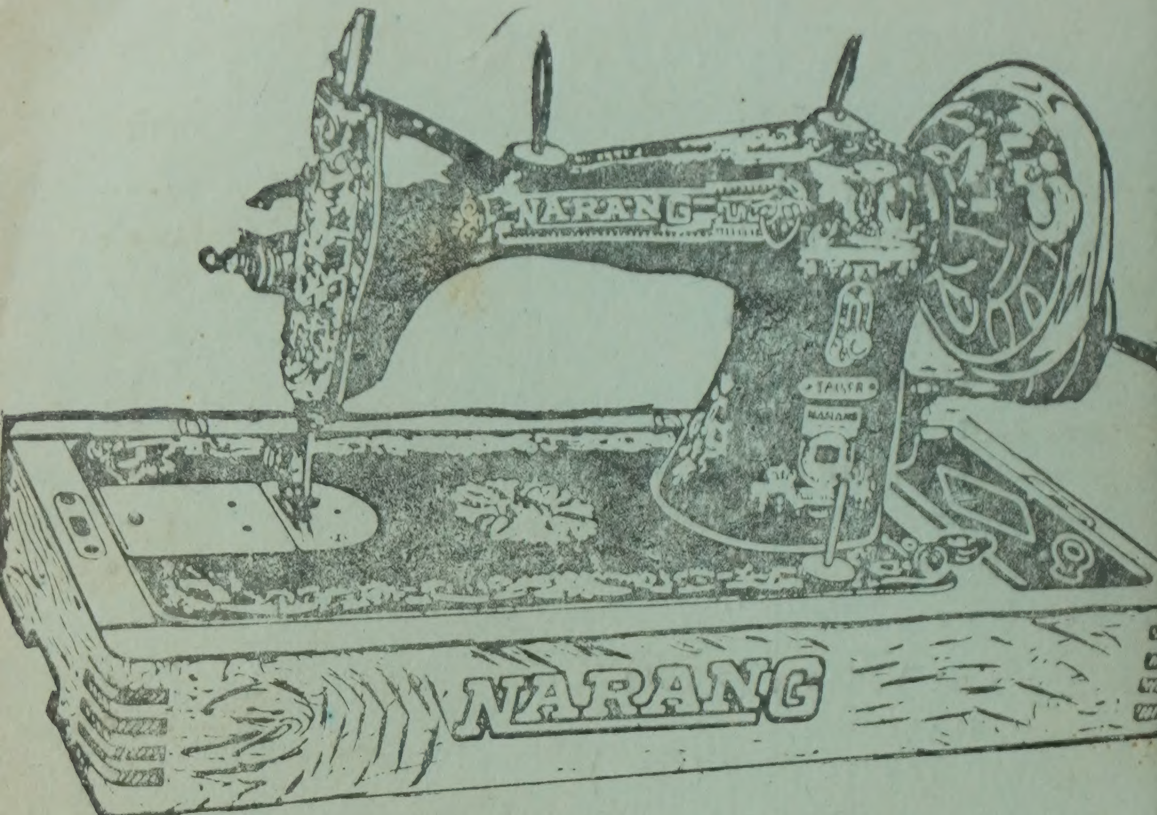
प्राप्ति स्थान :

१—श्री सत्यधर्म प्रकाशन ट्रस्ट, "श्री सत्यधर्म मन्दिर,"

स्वामी हेमराज मिशन मार्ग,

७/५, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली-११०००८

फोन नं० 5720660



मुद्रक : सैनी प्रिण्टर्स, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-6 । फोन 512163